About the Book

इस किताब को अग्रवाल एग्जामकार्ट के विशेषज्ञों की टीम ने तैयार किया है। इस पुस्तक को लाने में हमारी टीम ने बहुत मेहनत की है। टीम ने प्रामाणिक प्रश्नों को एकत्र कर, प्रत्येक प्रश्न का विस्तृत हल प्रदान किया और फिर स्टडी बुक के प्रारूप में परिवर्तित किया। इस पुस्तक के हल उन विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए हैं जिनके पास विशाल शिक्षण अनुभव है और छात्रों के चयन का सराहनीय ट्रैक रिकॉर्ड है। यही कारण है कि प्रत्येक हल सटीक और समझने में आसान है। कई बार हमारी पुस्तक के प्रश्न पेपर के समान होते हैं और इसलिए इन महत्वपूर्ण प्रश्नों को हल करने से निश्चित रूप से आपको अपनी परीक्षा की तैयारी करने और अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

अन्य उपयोगी पुस्तकें

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB1658

BPSC TRE बिहार शिक्षक संपूर्ण स्टडी बुक
CB1658
AGRAWAL EXAMCART

BPSC TRE बिहार शिक्षक
संपूर्ण स्टडी बुक
ISBN - 978-93-5703-068-7
9 789357 030687
₹ 549

बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

BPSC TRE
TEACHER RECRUITMENT EXAM
बिहार शिक्षक
प्राथमिक शिक्षक
भाग 1 एवं 2

संपूर्ण
स्टडी बुक

हिंदी | English | प्राथमिक गणित | मानसिक क्षमता परीक्षण | सामान्य जागरूकता | सामान्य विज्ञान | सामाजिक विज्ञान | भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन | भूगोल | पर्यावरण

BPSC TRE UNNATI SERIES
एक ऐसी अध्ययन पुस्तक जो कराये कम समय में सम्पूर्ण परीक्षा की सटीक तैयारी !

मुख्य विशेषताएँ

Theory
प्राथमिक शिक्षक परीक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित थ्योरी

एवं

Questions
1600+ महत्वपूर्ण अध्यायवार प्रश्न

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

Code	Price	Pages	ISBN
CB1658	₹549	531	978-93-5703-068-7

विषय सूची

➔ Important Information	vi
➔ BPSC SUPER TET लिखित परीक्षा पैटर्न	xii

सामान्य अध्ययन	1-276
1. प्राचीन भारत का इतिहास (Ancient Indian History)	1-20
2. मध्यकालीन भारत का इतिहास (Medieval Indian History)	21-31
3. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन (Indian Independence Movement)	32-61
4. भूगोल (Geography)	62-110
5. पर्यावरण अध्ययन (Environmental Studies)	111-171
6. भारतीय संविधान (Indian Constitution)	172-198
7. भौतिक विज्ञान (Physics)	199-209
8. रसायन विज्ञान (Chemistry)	210-214
9. जीव विज्ञान (Biology)	215-230
10. सामान्य जागरूकता (General Awareness)	231-276

गणित	1-59
1. संख्या पद्धति (Number System)	1-3
2. म.स.प एवं ल.स.प. (HCF & LCM)	4-6
3. वर्गमूल एवं घनमूल (Square-Root & Cube-Root)	7-9
4. घातांक एवं करणी (Surds and Indices)	10-11
5. भिन्न एवं दशमलव संख्याएँ (Fractions and Decimal Numbers)	12-14
6. औसत (Average)	15-16
7. अनुपात एवं समानुपात (Ratio and Proportion)	17-19
8. प्रतिशतता (Percentage)	20-22
9. लाभ–हानि एवं बट्टा (Profit-Loss and Discount)	23-25
10. ब्याज (Interest)	26-29
11. समय और कार्य (Time and Work)	30-32
12. समय, चाल एवं दूरी (Time, Speed and Distance)	33-36
13. क्षेत्रमिति (Mensuration)	37-41
14. सांख्यिकी (Statistics)	42-44
15. बीजगणित (Algebra)	45-49
16. क्रमचय एवं संचय (Permutation and Combination)	50-53
17. ज्यामिति (Geometry)	54-59

तर्कशक्ति	**60-117**
1. अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण (English Alphabet Test)	**60-63**
2. सांकेतिक भाषा परीक्षण (Coding-Decoding)	**64-68**
3. सादृश्यता परीक्षण (Analogy Test)	**69-72**
4. वर्गीकरण (Classification)	**73-75**
5. शब्दों का तार्किक क्रम (Logical Sequence of Words)	**76-78**
6. अक्षर/संख्या तथा क्रम परीक्षण (Letter/Number and Sequence Test)	**79-81**
7. रक्त सम्बन्ध (Blood Relation)	**82-84**
8. दिशा परीक्षण (Direction Test)	**85-89**
9. शृंखला परीक्षण (Series Test)	**90-92**
10. पासा (Dice)	**93-96**
11. वेन आरेख (Venn Diagram)	**97-100**
12. न्याय संगत (Syllogism)	**101-104**
13. कैलेण्डर और घड़ी (Calendar and Clock)	**105-107**
14. अभाषिक तर्कशक्ति (Non-Verbal Reasoning)	**108-113**
15. तार्किक तर्कशक्ति (Logical Reasoning)	**114-117**
हिन्दी भाषा	**118-183**
1. अपठित गद्यांश–पद्यांश	**118-120**
2. वर्ण विचार	**121-123**
3. वर्तनी	**124-125**
4. शब्द रचना : तत्सम.तद्भव, देशज. विदेशज संकर एवं विकारी–अविकारी शब्द	**126-128**
5. सन्धि प्रकरण	**129-135**
6. समास प्रकरण	**136-139**
7. हिन्दी व्याकरण : संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया–विशेषण, अव्यय, लिंग, वचन, कारक, काल एवं वाच्य	**140-151**
8. उपसर्ग–प्रत्यय	**152-155**
9. वाक्य विचार	**156-158**
10. शब्द भण्डार: विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, श्रुतिसम शब्द, अनेकार्थी, शब्द एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द	**159-164**
11. मुहावरे–लोकोक्तियाँ	**165-166**
12. वाक्यगत अशुद्धियाँ	**167-169**
13. रिक्त स्थानों की पूर्ति	**170**
14. रस, छन्द एवं अलंकार	**171-181**
15. हिन्दी साहित्य : हिन्दी गद्य–पद्य कृति एवं कृतिकार	**182-183**

English	184-243
1. Comprehension	184-185
2. Noun: Number, Gender, Case & Pronoun	186-192
3. Adjective	193-195
4. Adverb	196-197
5. Preposition	198-200
6. Conjunction	201-202
7. Interjection	203
8. Correct Forms of Verb	204-207
9. Articles	209-211
10. Subject Verb Agreement	212-214
11. Word Formation and Sentence Structure	215-218
12. Punctuation	219-222
13. Figures of Speech	223-225
14. Voice	226-227
15. Narration	228-232
16. Sentence Improvement	233
17. Common Errors	234
18. Vocabulary : Antonyms, Synonyms, One Word Substitution, Idioms and Phrases and Spellings	235-240
19. Phrasal Verbs	241-243

बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

BPSC SUPER TET लिखित परीक्षा पैटर्न

प्राथमिक शिक्षक

पेपर नम्बर	विषय	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक	अवधि
1	भाषा (Qualifying)	खंड 1 – 25, English	25	2 घंटा
		खंड 2 – 75, हिन्दी	75	
2	सामान्य अध्ययन	150	150	2 घंटा
कुल		**250**	**250**	**4 घंटा**

माध्यमिक शिक्षक

पेपर नम्बर	विषय	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक	अवधि
1	भाषा (Qualifying)	खंड 1 – 25, English	25	2 घंटा
		खंड 2 – 75, हिन्दी	75	
2	सामान्य अध्ययन	खंड 1 – 100, विषय	100	2 घंटा
		खंड 2 – 50 सामान्य अध्ययन	150	
कुल		**250**	**250**	**4 घंटा**

उच्च माध्यमिक शिक्षक

पेपर नम्बर	विषय	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक	अवधि
1	भाषा (Qualifying)	खंड 1 – 25, English	25	2 घंटा
		खंड 2 – 75, हिन्दी	75	
2	सामान्य अध्ययन	खंड 1 – 100, विषय	100	2 घंटा
		खंड 2 – 50 सामान्य अध्ययन	150	
कुल		**250**	**250**	**4 घंटा**

अध्याय 1

प्राचीन भारत का इतिहास (Ancient History)

सिंधु घाटी की सभ्यता (Indus Velley Civilization)

1. हड़प्पाः एक लुप्त नगर की खोज (Harappa: Discovery of a Lost City)

- हड़प्पा, उपमहाद्वीप के सबसे पुराने नगरों में से एक था जो सिंधु नदी के तट पर खोजा जाने वाला पहला नगर था, चूँकि यह सिंधु नदी के तट पर फला–फूला, इसलिए इसे "सिंधु घाटी सभ्यता" का नाम दिया गया।
- शोधकर्ताओं का मानना था कि सरस्वती नदी भी कभी यहाँ बहती थी लेकिन बाद में यह लुप्त हो गई। इसी कारण इस सभ्यता को "सिंधु – सरस्वती सभ्यता" के नाम से भी जाना जाता है।
- हड़प्पा के खंडहरों का वर्णन सबसे पहले ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक और अन्वेषक चार्ल्स मेसन ने अपनी पुस्तक में किया था। उसने हड़प्पा नगर की खोज उत्तर–पश्चिम सीमांत प्रांत में की थी जो अब पाकिस्तान में स्थित है।
- 1856 में जब अभियंताओं (इंजीनियरों) ने लाहौर को कराची से जोड़ने वाली एक रेलवे लाइन बिछाई, तो उन्हें और जली हुई ईंटें मिलीं। उनके महत्व को समझे बिना, उन्होंने रेलमार्ग बिछाने के लिए ईंटों का उपयोग किया।
- 1920 के दशक में पुरातत्वविदों ने हड़प्पा और मोहनजो–दारो (मोहनजोदड़ो) नगरों की खुदाई शुरू की। उन्होंने इन लंबे समय से अज्ञात नगरों के अवशेषों का पता लगाया।
- 1924 में भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने हड़प्पा और मोहनजोदडो (खुदाई की जाने वाली पहली साइट) के बीच कई सामान्य विशेषताएँ पाईं। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे एक बड़ी सभ्यता का हिस्सा थे।
- कुछ मामूली अंतर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के मिट्टी के बर्तनों में पाए गए हैं। इससे शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि हड़प्पा मोहनजोदड़ों से पुराना था।
- मोहनजोदड़ों में पुरातत्व स्थल को 1980 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया गया था।
- सिंधु सभ्यता का समय
  - **भौगोलिक सीमा** : दक्षिण एशिया
  - **काल** : कांस्य युग
  - **समय** : 3300 से 1900 ईसा पूर्व (रेडियोकार्बन डेटिंग पद्धति का उपयोग करके निर्धारित)
  - **क्षेत्र** : 13 लाख वर्ग किमी
  - **नगर** : 6 बड़े नगर
  - **गांव** : 200 से अधिक
- यह सभ्यता कांस्य युग (3300 ईसा पूर्व – 1200 ईसा पूर्व) की है, क्योंकि इसमें कांस्य से बनी वस्तुओं का उपयोग किया जाता था। हड़प्पा सभ्यता को निम्नलिखित कारणों से 'नगरीय सभ्यता' कहा जाता है:
  - सुनियोजित नगरी व्यवस्था।
  - आश्चर्यजनक निर्माण और वास्तुकला।
  - स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता।
  - मानकीकृत भार मापन।
  - ठोस कृषि और शिल्पकारी आधार
- **हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल**
  - **हड़प्पा** रावी के तट पर पंजाब के साहीवाल जिले में स्थित है। इसकी खुदाई 1921 में की गई थी।
  - **मोहनजोदड़ो** सिंधु के तट पर सिंध के लरकाना जिले में स्थित है। इसकी खुदाई 1922 में की गई थी।
  - **अमरी** बलूचिस्तान के पास सिंधु नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1935 में की गई थी।
  - **लोथल** गुजरात में खंभात की खाड़ी के पास भोगवा नदी पर स्थित है। इसकी खुदाई 1953 में की गई थी। यह गोदी के लिए जाना जाता है।
  - **धोलावीरा** गुजरात में कच्छ के रण में स्थित है। इसकी खुदाई 1985 में हुई थी।
  - **कालीबंगा** राजस्थान में घग्गर नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1953 में की गई थी।
  - **मांडा** चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। इसकी खुदाई 1976–77 में की गई थी।
  - **कोटदिजी** पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। इसकी खुदाई 1955 और 1957 में की गई थी।
  - **चन्हूदडो** सिंध, पाकिस्तान में स्थित है और 1931 में इसकी खुदाई की गई थी। यह एक मनका कारखाने (Bead factory) के लिए जाना जाता था।

2. हड़प्पा सभ्यता की अनूठी विशेषताएँ (Unique Features of Harappan Civilisation)

I. नगर नियोजन –

- नगर नियोजन सिंधु सभ्यता की एक अनूठी विशेषता है। हड़प्पा नगर के दो नियोजित क्षेत्र थे। अन्य सभी नगर जहाँ हड़प्पा के समान

भवन पाए गए, उन्हें हड़प्पा के प्रतिरूप के रूप में वर्णित किया गया। इन नगरों को दो या दो से अधिक भागों में बाँटा गया था।

- **ऊपरी नगर (गढ़):** पश्चिम का भाग, जो छोटा लेकिन ऊँचा था, गढ़ कहलाता था। इसका उपयोग प्रशासकों द्वारा किया गया था।
- **निचला नगर:** पूर्व का हिस्सा बड़ा था लेकिन निचला हिस्सा निचला नगर कहलाता था। यहाँ आम लोग निवास करते थे।

- प्रत्येक भाग के चारों ओर पकी हुई ईंटों की दीवारें बनाई गई थीं। ईंटें इतनी अच्छी तरह से पकी हुई थीं कि वे हजारों वर्षों तक चली हैं। ईंटों को एक इंटरलॉकिंग प्रतिरूप में रखा गया था और इससे दीवारें मजबूत हो गई। कृपया ध्यान दें कि पकी हुई ईंटों का उपयोग किया गया था क्योंकि ये मजबूत, कठोर, टिकाऊ और आग, पानी या बारिश प्रतिरोधी होती थीं।
- कुछ नगरों में (ऊपरी नगर) गढ़ पर विशेष भवनों का निर्माण किया गया था। उदाहरण के लिए, मोहनजोदड़ो में, इस क्षेत्र में एक बहुत ही विशेष तालाब, जिसे पुरातत्वविद महान स्नानागार कहते हैं, बनाया गया था। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और लोथल जैसे कुछ नगरों में विस्तृत भंडारगृह भी थे।
- अन्य शहरों जैसे कालीबंगा और लोथल में अग्नि वेदियां थीं, जहां यज्ञ एवं कर्मकाण्ड किए जाते थे।

II. सड़कें –

सड़कों को रेखीय प्रतिरूप (ग्रिड पैटर्न) पर बनाया गया था। वे उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम की ओर एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। सड़कें गोल कोनों वाली चौड़ी थीं।

III. मकान –

गली के दोनों ओर मकान बने थे। मकान या तो एक या दो मंजिला थे। अधिकांश घरों में कई कमरे, एक आंगन और एक कुआँ था। प्रत्येक घर में शौचालय और स्नानघर थे। घरों का निर्माण पकी गई ईंटों और गारे से किया जाता था। धूप में सुखाई हुई और आग में जलाई हुई ईंटों का भी उपयोग किया जाता था। अधिकांश ईंटें एक समान आकार (आयताकार) की थीं। छतें सपाट थीं। मन्दिरों या पूजा स्थलों की उपस्थिति का कोई स्पष्ट प्रमाण अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

IV. नालियाँ –

इनमें से कई नगरों में नालियाँ ढकी हुई थीं। नालियों को स्लैब या ईंटों से ढक दिया गया था। प्रत्येक नाले में एक निम्न ढलान थी ताकि पानी बह सके। नालियों को साफ करने के लिए नियमित अंतराल पर छेद किए गए थे। मुख्य नालों में मिलने से पहले घर की नालियाँ कई गलियों से होकर गुजरती थीं। प्रत्येक घर का अपना सोख्ता गड्ढा था, जो सभी तलछट एकत्र करता था और केवल पानी को गली के नाले में बहने देता था।

वैदिक युग
(The Vedic Age)

3. वैदिक युग
(The vedic age)

भारत में नगरीकरण का पहला चरण सिंधु सभ्यता के पतन के साथ समाप्त हुआ। आर्यों के आगमन के साथ वैदिक युग नामक एक नए युग की शुरुआत हुई। यह भारत के इतिहास में 1500 ईसा पूर्व – 600 ईसा पूर्व के बीच की अवधि है। इसे इसका नाम चार 'वेदों' से प्राप्त हुआ है। इसे दो उप–चरणों में वर्गीकृत किया गया है–

- प्रारंभिक वैदिक युग (1500–1000 ईसा पूर्व)
- उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई.पू.)

- **आर्य:**

  आर्य इंडो–आर्यन भाषा बोलने वाले, अर्ध खानाबदोश चरवाहे थे। वे हिंदू कुश पर्वत के खैबर दर्रे के माध्यम से प्रवास की कई समूहों में मध्य एशिया से आए थे। यद्यपि पशुपालन उनका मुख्य व्यवसाय था, फिर भी वे काटो और जलाओ कृषि भी करते थे। अर्थात् वे स्थानान्तरण या झूमिंग कृषि करते थे।

वैदिक संस्कृति का विस्तार

समय, प्रसार और स्रोत	
भौगोलिक सीमा	उत्तर भारत
अवधि	लौह युग
समयावधि	1500 ईसा पूर्व – 600 ईसा पूर्व
सूत्र ग्रन्थ	वैदिक साहित्य
सभ्यता की प्रकृति	ग्रामीण

4. स्रोत
(Source)

- **वैदिक साहित्य:** वैदिक साहित्य को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

  (i) श्रुति:

  - श्रुति में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं। उन्हें पवित्र, शाश्वत और एक निर्विवाद सत्य माना जाता है। 'श्रुति' का अर्थ है सुनना (या अलिखित) जिनको पीढी दर पीढी मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था। वेद 4 प्रकार के होते हैं–
    - **ऋग्वेद:**
      - यह सबसे पुराना वेद है और इसकी रचना लगभग 3500 साल पहले हुई थी। ऋग्वेद में एक हजार से अधिक सूक्त हैं, जिन्हें "अच्छी तरह से कहा गया" कहा जाता है। ये भजन विभिन्न देवी–देवताओं की स्तुति को समर्पित हैं। इनमें तीन देवता विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, जो हैं–
        - **अग्नि–** अग्नि के देवता
        - **इंद्र–** युद्ध के देवता

- ✦ **सोम–** एक पौधा जिससे एक विशेष पेय तैयार किया जाता था।

- ♦ ऋग्वेद के सूक्तों की रचना ऋषियों ने की थी। उस समय के आचार्यों ने छात्रों को प्रत्येक शब्दांश और वाक्य को थोड़ा–थोड़ा करके, बहुत सावधानी से पढ़ना और याद करना सिखाया था।
- ♦ अधिकांश सूक्त पुरुषों द्वारा रचे, सिखाए और सीखे जाते थे। हालाँकि कुछ सूक्तों की महिलाओं द्वारा भी रचना की गई थी। ऋग्वेद प्राचीन आर्य भाषा संस्कृत में रचा गया है। ऋग्वेद को स्वयं पढ़ने के बजाय पढ़ा और सुना गया था। इसके लिखे जाने के शताब्दियों बाद पहली बार इसे लगभग 200 वर्ष पूर्व मुद्रित किया गया था।
- ♦ ऋग्वेद के कुछ सूक्त संवाद के रूप में हैं। यह एक ऐसे साहित्य का हिस्सा है जो विश्वामित्र नामक एक ऋषि और उन दो नदियों (ब्यास और सतलुज) के बीच एक संवाद है जिन्हें देवी के रूप में पूजा जाता था।
- ♦ ऋग्वेद में मवेशियों, बच्चों (विशेषकर पुत्रों) और घोड़ों के लिए कई प्रार्थनाएँ किया जाना वर्णित हैं।

- ➢ **सामवेद :** यह गायन से सम्बन्धित सबसे पुराना संदर्भ है।
- ➢ **यजुर्वेद :** इसे यज्ञ और यज्ञविधि पुस्तक भी कहा जाता है।
- ➢ **अथर्ववेद :** जादू, टोना और लोकिक साहित्य की पुस्तक।

(ii) स्मृति : धर्म पर शिक्षाओं वाले ग्रंथों का एक समूह है। स्मृतियाँ शाश्वत नहीं होती हैं। उन्हें लगातार संशोधित किया जाता है। श्स्मृतिश का अर्थ है निश्चित और लिखित साहित्य।

क्या आप जानते हैं?

★ राष्ट्रीय आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" "(सत्य की ही जीत होती है)" मुंडको उपनिषद से लिया गया है।

- **पुरातात्विक स्रोत :** सिंधु और गंगा के किनारे पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त सामग्री जैसे लोहे के औजार और मिट्टी के बर्तन आदि को पुरातात्विक स्रोत कहा जाता है।

5. वैदिक संस्कृति (Vedic culture)

- **राजनीति तथा समाज :**
  - ❖ ऋग्वैदिक राज्य व्यवस्था संबंधों पर आधारित थी। कुल, राज्य व्यवस्था की मूल इकाई थी। यह कुलपति नामक मुखिया के अधीन थी। कई परिवार मिलकर एक ग्राम (गाँव) का निर्माण करते थे। ग्राम का नेतृत्व ग्रामणि नामक पदाधिकारी करते थे।
  - ❖ गांवों के एक समूह को विश (कबीला) कहा जाता था और इसका नेतृत्व विशपति करते थे। राजन जन का मुखिया होता था और उन्हें जनस्यगोपा (लोगों के संरक्षक) के रूप में संबोधित किया जाता था।
- **सामाजिक संगठन :**
  - ❖ वैदिक समाज पितृसत्तात्मक होता था। गौरवर्ण के आर्य खुद को गहरे रंग के अनार्यो से अलग मानते थे और उनको वे दस्यु और दास कहते थे।
  - ❖ प्रारंभिक वैदिक समाज के भीतर तीन वर्ण (त्रेयी) थेय आम जनता को विश कहा जाता था, योद्धा वर्ग को क्षत्रिय कहा जाता था और पुरोहित वर्ग को ब्राह्मण कहा जाता था।
  - ❖ उत्तरवर्ती चरण में, जब आर्यों को अपनी सामाजिक व्यवस्था में अनार्य कुशल श्रमिकों को समायोजित करना पड़ा, तो एक कठोर चौथा वर्ण विकसित हुआ, अर्थात, पुरोहित (ब्राह्मण), योद्धा (क्षत्रिय), भूमि के मालिक (वैश्य) और कुशल श्रमिक (शूद्र)। शूद्र शब्द का प्रयोग ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुष सूक्त में हुआ है।
- **महिलाओं की स्थिति :**
  - ❖ ऋग्वैदिक समाज में, महिलाओं को अपेक्षाकृत कुछ स्वतंत्रता प्राप्त थी। पत्नी को घर की स्वामिनी के रूप में सम्मान दिया जाता था। वह अपने पति के साथ उनके घर में अनुष्ठान कर सकती थी।
  - ❖ समाज में बाल विवाह और सती प्रथा प्रचलित नहीं थी। विधवाओं के पुनर्विवाह पर कोई रोक नहीं थी। फिर भी, महिलाएं अपने माता–पिता से पैतृक संपत्ति पाने के अधिकार से वंचित थी। किसी सार्वजनिक मामले में प्रायः उनकी कोई भूमिका नहीं होती थी।
  - ❖ उत्तर वैदिक काल में समाज में महिलाओं की भूमिका के साथ–साथ परिवार के भीतर भी उनकी स्थिति में गिरावट आ गई। महिलाएं अब परिवार में अनुष्ठान नहीं कर सकती थीं। विवाह के नियम भी बहुत अधिक जटिल और कठोर हो गए थे।
  - ❖ बहुविवाह आम हो गया था। विधवा पुनर्विवाह को अच्छा नहीं माना जाता था। महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाने लगा था। साथ ही अंतर्जातीय विवाहों को भी हीन दृष्टि से देखा जाने लगा था।
- **युद्ध तथा संपत्ति :**
  - ❖ युद्धों में घोड़ों का प्रयोग किया जाता था। भूमि, जल और जनता तथा मवेशियों पर अधिकार करने के लिए लड़ाई लड़ी जाती थी। कोई नियमित सेना नहीं राखी जाती थी, लेकिन ऐसी सभाएँ अस्तित्व में थीं जहाँ लोग आपस में मिला करते थे और युद्ध और शांति के मामलों पर चर्चा करते थे। अधिकांशतः पुरुषों द्वारा युद्धों में भाग लिया जाता था और नेताओं को भी चुना जाता था।
  - ❖ युद्ध से प्राप्त धन नेताओं द्वारा रखा जाता था, कुछ मन्दिरों और गुरुकुलों व पुरोहितों को दिया जाता था और शेष लोगों के बीच वितरित कर दिया जाता था।
  - ❖ कुछ धन का उपयोग यज्ञों या यज्ञों के प्रदर्शन के लिए किया जाता था जिसमें अग्नि में प्रसाद चढ़ाया जाता था। प्रसाद देवी–देवताओं के लिए चढ़ाए जाते थे। प्रसाद में घी, अनाज और कुछ मामलों में जानवर शामिल हो सकते थे।
- **लोगों का वर्णन करने के लिए शब्द**
  - ❖ लोगों का वर्णन करने के कई तरीके हैं – वे जो काम करते हैं, जिस भाषा में वे बोलते हैं, जिस स्थान से वे संबंधित हैं, उनके परिवार, उनके समुदायों और सांस्कृतिक प्रथाओं के संदर्भ में।

- इस काल के ऐसे दो समूह हैं जिनका वर्णन उनके कार्य के संदर्भ में किया गया है –
  - **पुरोहित:** जिन्हें ब्राह्मण भी कहा जाता था। वे तरह–तरह के अनुष्ठान करते थे।
  - **राजा:** उनके पास कोई राजधानी, महल या सेना नहीं होती थी, न ही वे कर वसूला करते थे। पुत्रों को उनके पिता के बाद राजा के रूप में मान्यता नहीं दी जाती थी।
- लोगों या समुदाय का समग्र रूप से वर्णन करने के लिए दो शब्दों का उपयोग किया गया थारू
  - एक था जन
  - दूसरा था विश
- अनेक विश या जनों का उल्लेख नाम से किया गया है। इसलिए हम पुरु जन या विष, भरत जन या विष, यदु जन या विष आदि का संदर्भ पाते हैं।
- सूक्तों की रचना करने वाले लोगों ने खुद को आर्य बताया और अपने विरोधियों को दास या दस्यु कहा। दास शब्द का अर्थ है गुलाम। महिलाएं और पुरुष दोनों ही दास होते थे और इनको अक्सर युद्ध में पकड़ कर दास बना लिया जाता था।

क्या आप जानते हैं?

- वैदिक लोगों को ज्ञात धातुएं–
  - स्वर्ण (हिरण्य)
  - लौह (श्याम)
  - तांबा/कांस्य (अयस)

- **धर्म:**
  - ऋग्वेदिक आर्यों ने पृथ्वी, अग्नि, वायु, वरुण, इंद्र जैसे ज्यादातर सांसारिक और खगोलीय देवताओं की पूजा की। अदिति (अनंत काल की देवी) और उषा (भोर का रूप) जैसी स्त्री देवीयों का भी अस्तित्व था।
  - इस काल में मूर्ति पूजा अभी अस्तित्व में नहीं आई थी। बाद में पान्डित्य (पूजा–पाठ करना) एक वंशानुगत व्यवसाय बन गया। इस समय पूर्व से भिन्न देवताओं की पूजा होने लगी थी। नए देवताओं को शायद अनार्यों से अपनाया गया था और इंद्र और अग्नि देवताओं ने अपना महत्व खो दिया था।
  - प्रजापति (निर्माता) विष्णु (रक्षक) और रुद्र (विनाशक) प्रमुख हो गए। इन्हें देवतात्रय कहा जाता था। यज्ञ और अनुष्ठान (कर्मकाण्ड) अधिक विस्तृत हो गए।

जनपद और महाजनपद
(Janapad and Mahajanpad)

6. छठी शताब्दी ईसा पूर्व का महत्व
()

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। इससे गंगा के मैदानी इलाकों में लोगों के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक जीवन में बदलाव आया। उत्तर भारत में एक नई बौद्धिक जागृति का विकास होने लगा। महावीर और गौतम बुद्ध ने इस नई जन–जागृति का प्रतिनिधित्व किया।

7. बदलते समाज में लोहे की भूमिका
()

- समाज के इस परिवर्तन में लोहे ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गंगा घाटी की उपजाऊ मिट्टी और लोहे के हल के फाल के उपयोग से कृषि उत्पादकता में सुधार हुआ। इसके अलावा, लोहे ने शिल्प उत्पादन की सुविधा प्रदान की।
- कृषि अधिशेष और शिल्प उत्पादों में वृद्धि के परिणामस्वरूप व्यापार और विनिमय केंद्रों का उदय हुआ। इससे कस्बों और शहरों के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस प्रकार, लोहे के उपयोग का ज्ञान होने के कारण मगध को अन्य महाजनपदों की तुलना में अधिक लाभ हुआ। और मगध अपना एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित कर पाया।

8. गण–संघ तथा साम्राज्य
()

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान उत्तर भारत में दो प्रकार की सरकारें थीं।
  - **गण – संघ:** 'गण' शब्द का अर्थ है श्समान स्थिति के लोगश। 'संघ' का अर्थ है 'सभा'। गण–संघों में एक कुलीन समूह द्वारा एक छोटे से भौगोलिक क्षेत्र को शासित किया जाता था। गण संघों के द्वारा समतावादी परंपराओं का पालन किया जाता था। ये अराजतांत्रिक राज्य थे।
  - **राज्य –** एक 'राज्य' से तात्पर्य एक राजा या रानी द्वारा शासित क्षेत्र से है। किसी राज्य (राजतंत्र) में, एक परिवार, जो लंबे समय तक शासन करता है, एक राजवंश बन जाता है। आमतौर पर ये राज्य रूढ़िवादी वैदिक परंपराओं का पालन करते थे।

9. सोलह महाजनपद ("महान देश")
(Sixteen Mahajanpads)

- बौद्ध ग्रंथ "अंगुत्तर निकाय" हमें इन महाजनपदों के बारे में जानकारी देता है। लगभग 2500 साल पहले, कुछ जनपद दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो गए थे, और उन्हें महाजनपद के रूप में जाना जाता था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व सोलह महाजनपद भारत–गंगा के मैदान में अस्तित्व में आ गए थे।
- महाजनपदों का उदय वास्तव में एक अर्ध–खानाबदोश संबंधों पर आधारित समाज का व्यापार और विनिमय प्रणाली वाले एक कृषि समाज में होने वाला संक्रमण था। इसलिए एक संगठित और सशक्त शासन प्रणाली के लिए एक केंद्रीकृत राज्य तंत्र की आवश्यकता थी।
- नए राजाओं ने अब सेना रखना शुरू कर दिया था। सैनिकों को नियमित वेतन दिया जाता था और पूरे वर्ष राजा द्वारा बनाए रखा जाता था। कुछ भुगतान के लिए संभवतः पंच मार्क वाले सिक्कों का उपयोग किए जाते थे जिन्हें आहत सिक्को कहा जाता था।

- ये 16 महाजनपद अंग, मगध, वज्जी, मल्ल, काशी, कुरु, कोसल, अवंती, चेदि, वत्स, पांचाल, मत्स्य, सुरसेन, अस्मक, गांधार और कम्बोज थे। स्मरण रहे इन महाजनपदों में अश्मक दक्षिण भारत में गोदावरी नदी के तट पर स्थित था जबकि गांधार सदूर पश्चिमी क्षेत्र वर्तमान में अफगानिस्तान में या स्वाभाविक रूप से कहा जा सकता है। इन दो सुदूरवर्ती महाजनपदों के बीच के क्षेत्र पर किसी न किसी महाजनपद का राज्य विस्तार रहा होगा।
- इन सभी महाजनपदों में चार महाजनपद प्रमुख थे और ये निम्न थे:
  - बिहार में मगध
  - उज्जैन में अवंती
  - पूर्वी उत्तर प्रदेश में कोसल और
  - कौशाम्बी, इलाहाबाद में वत्स।
- इन चार महाजनपदों में से केवल मगध ही एक साम्राज्य के रूप में उभर सका।

10. मगध साम्राज्य (Magadh Empire)

- लगभग दो सौ वर्षों में मगध सबसे महत्वपूर्ण महाजनपद बन गया। गंगा और सोन जैसी कई नदियाँ मगध से होकर बहती थीं। ये नदियाँ परिवहन, जल आपूर्ति तथा भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी।
- मगध के कुछ हिस्से वनाच्छादित थे। जंगल में रहने वाले हाथियों को पकड़कर सेना के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता था। वनों से मकान, गाड़ियाँ और रथ बनाने के लिए लकड़ी भी मिलती थी। इसके अलावा, इस क्षेत्र में लौह अयस्क की खदानें थीं जिनका उपयोग मजबूत धातु उपकरण और हथियार बनाने के लिए किया जा सकता था।
- **मगध के उदय के कारण**
  - मगध गंगा के मैदान के निचले हिस्से में स्थित था। यहाँ का मैदान उपजाऊ था जिससे समृद्ध कृषि उपज सुनिश्चित हो गई। इससे राज्य को नियमित और पर्याप्त आय प्राप्त होती थी।
  - घने जंगलों से इमारतों के निर्माण के लिए लकड़ी और सेना के लिए हाथियों की आपूर्ति आसान थी।
  - प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से लोहे की प्रचुरता के कारण सेना लोहे से बने हथियारों से लैस हो गई।
  - बढ़ते व्यापार और वाणिज्य ने लोगों की आवाजाही के साथ–साथ कला और शिल्प के केंद्रों में लोगों के निवास की सुविधा प्रदान की।
  - इसके परिणामस्वरूप नगरीकरण हुआ और एक साम्राज्य के रूप में मगध का उदय हुआ।
- **प्राचीन मगध साम्राज्य के वंश:** मगध साम्राज्य पर मुख्यतः चार वंशों ने शासन किया था:
  - **हर्यंक वंश:** मगध के राजनीतिक वर्चस्व में क्रमिक वृद्धि हर्यंक वंश के बिंबिसार के साथ शुरू हुई। बिम्बिसार ने मगध साम्राज्य के क्षेत्र को जीता और लिच्छवि, मद्र और कोसल राज्यों के साथ वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा साम्राज्य का विस्तार किया। बुद्ध के समकालीन उनके पुत्र अजातशत्रु ने राजगृह में पहली बौद्ध परिषद आयोजित की थी। अजातशत्रु के उत्तराधिकारी उद्यन ने पाटलिपुत्र नगर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया था।
  - **शिशुनाग वंश:** हर्यंक वंश के बाद शिशुनाग वंश मगध का उत्तराधिकारी बना। शिशुनाग वंश के राजा कालाशोठ ने राजधानी को पाटलिपुत्र से वैशाली स्थानांतरित कर दिया और वैशाली में ही द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया था।
  - **नन्द वंश:** नंद भारत के पहले शूद्र साम्राज्य निर्माता थे। महापद्म को प्रथम नंद शासक माना जाता है। महापद्म नंद के बाद उनके आठ पुत्र हुए। वे नवानंद (नौ नंद) के रूप में जाने जाते हैं। अंतिम नंद शासक धननंद को चंद्रगुप्त मौर्य ने मार डाला और मौर्य वंश की स्थापना की थी।
  - **मौर्य वंश:** इस राजवंश की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की थी और इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। अशोक इस वंश का सबसे महान शासक था।

क्या आप जानते हैं?

★ **नालंदा:** यह यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल है। नालंदा मगध के प्राचीन साम्राज्य में एक बड़ा बौद्ध मठ था। यह गुप्तों के शासनकाल के दौरान शिक्षा का सबसे प्रसिद्ध केन्द्र था। नालंदा शब्द तीन शब्दों ना + आलम + दा का एक संस्कृत संयोजन है जिसका अर्थ है "ज्ञान के उपहार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं"।

- **अजातशत्रु और वज्जि**
  - दीर्घ निकाय से वज्जियों का एक विवरण, एक प्रसिद्ध बौद्ध पुस्तक, जिसमें बुद्ध के कुछ प्रवचन शामिल हैं। ये लगभग 2300 साल पहले लिखे गए थे।
  - अजातशत्रु वज्जियों पर आक्रमण करना चाहता था। उन्होंने इस मामले पर सलाह लेने के लिए बुद्ध के पास अपने वस्सकार नाम के मंत्री को भेजा था।
  - बुद्ध ने पूछा कि क्या वज्जी अक्सर पूरी सभाओं में मिलते थे। जब उन्होंने हाँ में उत्तर सुना, तो उन्होंने उत्तर दिया कि वज्जी तब तक समृ) होते रहेंगे जब तक:
    - जब पूर्ण और लगातार सार्वजनिक सभाएं कीं जाएँगीं।
    - वे एक साथ मिलकर रहेंगे।
    - वे स्थापित नियमों का पालन करते रहेंगे।
    - वे बड़ों का सम्मान, उनका समर्थन और उनकी बात सुनते रहेंगे।
    - चैत्य (स्थानीय मंदिर) कस्बों और गांवों दोनों में बनाए जाते रहेंगे।
    - विभिन्न विश्वासों का पालन करने वाले बुद्धिमान संतों का सम्मान किया जाता रहेगा और उन्हें देश में प्रवेश करने और स्वतंत्र रूप से भ्रमण करने की अनुमति दी जाती रहेगी।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म
(Jainism and Buddhism)

11. जैन धर्म
(Jainism)

- जैन शब्द संस्कृत के "जिन" शब्द से बना है, जिसका अर्थ है स्वयं और बाहरी दुनिया पर विजय प्राप्त करना। जैन धर्म दुनिया के सबसे पुराने जीवंत धर्मों में से एक है। जैन धर्म 24 तीर्थंकरों पर आधारित है।
- एक 'तीर्थंकर', वह होता है जिसने अलग–अलग समय पर धार्मिक सत्य को प्रकट किया है। इस धर्म के पहले तीर्थंकर ऋषभदेव और अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान, महावीर के नेतृत्व में जैन धर्म को प्रमुखता मिली थी।
- जैनों के अंतिम और 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर थे।
- वह वज्जी संघ के एक समूह अर्थात् लिच्छवि गणराज्य का एक क्षत्रिय राजकुमार था। 30 साल की उम्र में उन्होंने घर छोड़ दिया और जंगल में रहने चले गए।
- महावीर स्वामी ने एक सरल सिद्धांत बताया– सत्य जानने की इच्छा रखने वाले पुरुषों और महिलाओं को अपना घर छोड़ देना चाहिए तथा उन्हें अहिंसा के नियमों का बहुत सख्ती से पालन करना चाहिए, जिसका अर्थ है जीवित प्राणियों को न तो चोट पहुँचाना चाहिए और ना मारना चाहिए।
- महावीर के अनुयायी, जो जैन के नाम से जाने जाते थे, को बहुत सादा जीवन व्यतीत करना पड़ता था तथा उन्हें धर्म के प्रति ईमानदार होना पड़ता था अर्थात् उन्हें पाँच अणुव्रतों का पालन करना होता था।
- यद्यपि अधिकांश पुरुषों और महिलाओं के लिए इन सख्त नियमों का पालन करना बहुत मुश्किल था। फिर भी, हजारों लोगों ने जीवन के इस नए तरीके को सीखने और सिखाने के लिए अपने घरों को छोड़ दिया था।
- अपने आरम्भ से ही जैन धर्म को मुख्य रूप से व्यापारियों का समर्थन प्राप्त था। किसानों को अपनी फसलों की रक्षा के लिए कीड़ों को मारना पड़ता था, उनके लिए नियमों का पालन करना अधिक कठिन था।
- महावीर और उनके अनुयायियों की शिक्षाओं को कई शताब्दियों तक मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था। लगभग 1500 वर्ष पूर्व गुजरात के वल्लभी नामक स्थान पर वे जिस रूप में वर्तमान में उपलब्ध हैं, उस रूप में लिखे गए थे।

I. जैन धर्म की शिक्षाएँ–

- जैन धर्म ईश्वर को ब्रह्मांड के निर्माता के रूप में नहीं मानता है।
- जैन धर्म का मूल दर्शन अहिंसा है।
- जैन धर्म का अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना या जन्म–मृत्यु–पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाना है।
- जैन उस अंतिम निर्णय में विश्वास नहीं करता है जिसमें भगवान, एक सर्वोच्च प्राणी, यह तय करता है कि कौन स्वर्ग या नरक में जाता है।
- जैन धर्म इस बात का समर्थन करता है कि किसी के जीवन की अच्छाई या गुणवत्ता उसके कर्म से निर्धारित होती है। कृपया ध्यान दें कि यह विश्वास कि इस जीवन में किसी व्यक्ति के कार्य अगले जन्म की गुणवत्ता निर्धारित करते हैं, "कर्म के सिद्धान्त" के रूप में जाना जाता है।

II. त्रि–रत्न या तीन रत्न–

महावीर ने मोक्ष (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) और कर्म से मुक्ति के लिए त्रि–रत्नों का आह्वान किया। ये त्रि–रत्न हैं–

- सही आस्था
- सही ज्ञान
- सही कार्य

III. जैन आचार संहिता–

महावीर ने अपने अनुयायियों से सदाचारी जीवन जीने को कहा। स्वस्थ नैतिकता से भरा जीवन जीने के लिए, उन्होंने पाँच प्रमुख सिद्धांतों के पालन का उपदेश दिया। वे हैं–

- **अहिंसा–** किसी भी जीवित प्राणी को उपहति नहीं पहुँचाना
- **सत्य** – सच बोलना
- **अस्तेय** – चोरी नहीं करना
- **अपरिग्रह** – संपत्ति ग्रहण नहीं करना
- **ब्रह्मचर्य** – अविवाहित जीवन

क्या आप जानते हैं?

★ महावीर के एक प्रमुख और अन्तिम शिष्य गौतम स्वामी ने महावीर की शिक्षाओं को संकलित किया, जिन्हें आगम सिद्धांत कहा जाता है।

IV. दिगंबर तथा श्वेताम्बर–

समय के साथ, जैन धर्म दो शाखाओं में विभाजित हो गया, अर्थात् दिगंबर (वस्त्रहीन) और श्वेतांबर (श्वेत वस्त्र धारक)।

- **दिगंबर–**
  - दिगंबर रूढ़िवादी और पारंपरिक अनुयायी हैं।
  - दिगंबर संप्रदाय के साधु कोई वस्त्र नहीं धारण करते और नग्न रहते हैं। उन्हें किसी भी प्रकार की संपत्ति रखने की अनुमति नहीं है।
  - दिगंबर मानते हैं कि महिलाएं सीधे निर्वाण या मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती हैं।
- **श्वेताम्बर–**
  - श्वेतांबर सम्प्रदाय को प्रगतिशील माना जाता है।
  - श्वेतांबर संप्रदाय के साधु सफेद वस्त्र धारण करते हैं। उन्हें रजोहरण (ऊनी धागों वाली झाड़ू), भीख का कटोरा और किताब रखने की अनुमति है।
  - श्वेतांबर मानते हैं कि महिलाएं पुरुषों के समान ही मुक्ति पाने में सक्षम हैं।

12. बौद्ध धर्म
(Buddhism)

- लगभग 2500 साल पहले बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ का जन्म हुआ था। उन्हें गौतम बुद्ध के नाम से भी जाना जाता था। बुद्ध शाक्य गण के रूप में जाने जाने वाले एक छोटे गण से संबंधित थे, और एक क्षत्रिय थे।

- जब सिद्धार्थ केवल सात दिन के थे तब उनकी माता का देहांत हो गया। इसलिए उनका पालन–पोषण उनकी सौतेली माता गौतमी ने किया। जब वह एक युवा व्यक्ति थे, तो उन्होंने ज्ञान की खोज में अपने घर की सुख–सुविधाओं को छोड़ दिया।
- ग्रह त्याग के बाद वे कई वर्षों तक भटकते रहे, अन्य विचारकों से मिलते और विचार–विमर्श करते रहे थे।
- वह "चार महान दृश्यों" के बाद तपस्वी बन गए। चार महान घटनाऐं वे दुःख भरी घटनाऐं थी जो 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने देखी थीं। ये घटनाऐं थीं–
  - पीठ झुकाये सड़क पर चलता हुआ एक वृद्ध व्यक्ति
  - असाध्य बीमारी से प्रभावित एक व्यक्ति
  - अपने परिजन का शव् ले जाते हुए रोते–बिलखते लोग
  - एक तपस्वी
- उन्होंने बिहार के बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे कई दिनों तक ध्यान किया, जहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। उसके बाद, उन्हें बुद्ध या बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में जाना जाने लगा। इसके बाद वे वाराणसी के पास सारनाथ गए, जहाँ उन्होंने पहली बार शिक्षा दी। उन्होंने अपना शेष जीवन पैदल यात्रा करते हुए, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर, लोगों को पढ़ाते हुए बिताया, जब तक कि कुसीनारा में उनका निधन नहीं हो गया।

स्तूप के रूप में जानी जाने वाली यह इमारत उस स्थान को चिह्नित करने के लिए बनाई गई थी जहाँ बुद्ध ने पहली बार अपना संदेश पढ़ाया था।

I. बुद्ध की शिक्षाएँ–

- बुद्ध ने सिखाया कि जीवन दुख और दुख से भरा है। हमें जो चाहिए वो मिल भी जाए तो भी हम संतुष्ट नहीं होते और इससे भी ज्यादा को पाने की इच्छा रखते हैं। बुद्ध ने इसे लालसा या लिप्सा के रूप में वर्णित किया।
- उन्होंने सिखाया कि हर चीज में संयम का पालन करके इस निरंतर लालसा को दूर किया जा सकता है। उन्होंने लोगों को दयालु होना और जानवरों सहित दूसरों के जीवन के प्रति दया का भाव रखना भी सिखाया। उनका मानना था कि हमारे कार्यों के परिणाम (अर्थात् कर्म), चाहे अच्छे हों या बुरे, इस जीवन और अगले जीवन दोनों को प्रभावित करते हैं।
- बुद्ध ने सामान्य लोगों की भाषा प्राकृत में शिक्षा दी, ताकि हर कोई उनके संदेश को समझ सके।
- उन्होंने लोगों को केवल उनके द्वारा कही गई बातों को स्वीकार करने के बजाय स्वयं के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया।

II. बुद्ध के चार आर्य सत्य–

- जीवन दुख और कष्टों से भरा है।
- इच्छा ही दुख का कारण है।
- इच्छा का त्याग कर दुखों और कष्टों को दूर किया जा सकता है।
- सही मार्ग (महान अष्टांगिक मार्ग) का अनुसरण करके इच्छाओं को समाप्त किया जा सकता है।

III. अष्टांगिक पथ–

- सम्यक दृष्टि
- सम्यक संकल्प
- सम्यक वाणी
- सम्यक कर्मात
- सम्यक आजीविका
- सम्यक व्यायाम
- सम्यक स्मृति
- सम्यक समाधि

भगवान बुद्ध की शिक्षाएं सरल थीं और उन्हें उस भाषा में पढ़ाया गया था जिसे लोग संचार (आपसी संवाद) के लिए इस्तेमाल करते थे। चूँकि शिक्षाएँ लोगों की रोजमर्रा की चिंताओं को संबोधित करती थीं, अतः वे उनसे आसानी से जुड़ सकते थे। गौतम बुद्ध कर्मकांडों और यज्ञों के विरोधी थे।

क्या आप जानते हैं?

- **चौत्य–** एक बौद्ध मंदिर या एक ध्यान कक्ष हुआ करता था।
- **विहार–** भिक्षुओं के लिए मठध्रहने का स्थान होता था।
- **स्तूप–** बुद्ध के शरीर के अवशेषों पर निर्मित, महान कलात्मक स्मारक थे।

बौद्ध धर्म के हीनयान और महायान संप्रदायों के बीच अंतर

हीनयान	महायान
बुद्ध की मूर्तियों या चित्रों की पूजा नहीं की जाती थी।	बुद्ध की मूर्तियों और चित्रों की पूजा की जाती थी।
केवल साधना तक सीमित थे।	अनुष्ठानों का आयोजन किया करते थे।
व्यक्ति की मुक्ति को अपना लक्ष्य मानते थे।	व्यक्ति की मुक्ति को अपना लक्ष्य मानते थे।
इस सम्प्रदाय के ग्रथों में प्राकृत भाषा का प्रयोग किया है।	इस सम्प्रदाय के ग्रन्थों में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है।
हीनयान को थेरवाद के नाम से भी जाना जाता है। इसका विस्तार सीमित समय तक रह गया।	मध्य एशिया, सीलोन (श्रीलंका), बर्मा, नेपाल, तिब्बत, चीन, जापान में फैला, जहाँ मध्य मार्ग को स्वीकार किया गया।

IV. बोधिसत्व–

- बोधिसत्व ऐसे व्यक्ति माने जाते थे जिन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया था। एक बार जब उन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया, तो वे पूर्ण अलगाव में रह सकते थे और शांति से ध्यान कर सकते थे।
- हालांकि, ऐसा करने के बजाय, वे दुनिया में दूसरों को सिखाने और उनकी मदद करने के लिए बने रहे। बोधिसत्व की पूजा बहुत लोकप्रिय हो गई, और पूरे मध्य एशिया, चीन और बाद में कोरिया और जापान में फैल गई।

मौर्य सम्राज्य
(Mauryan Empire)

13. मौर्य साम्राज्य: भारत का पहला साम्राज्य
()

- **राजधानी:** पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना, बिहार)
- **सरकार:** साम्राज्य
- **ऐतिहासिक युग:** 322 ईसा पूर्व – 187 ईसा पूर्व
- **महत्वपूर्ण शासक:** चंद्रगुप्त, बिंदुसार, अशोक
- मौर्य साम्राज्य में कई नगर थे। इनमें राजधानी पाटलिपुत्र, तक्षशिला और उज्जैन शामिल थे। तक्षशिला मध्य एशिया सहित उत्तर–पश्चिम का प्रवेश द्वार था, जबकि उज्जैन उत्तर से दक्षिण भारत के मार्ग पर स्थित था। व्यापारी, अधिकारी और शिल्पकार प्रायः इन शहरों में ही रहते थे।
- मौर्य साम्राज्य में अन्य क्षेत्रों के अन्तर्गत किसानों और चरवाहों के गांव थे। मध्य भारत जैसे कुछ क्षेत्रों में, जंगल थे जहाँ लोग वन उपज इकट्ठा करते थे और भोजन के लिए जानवरों का शिकार करते थे। इस काल में लोग विभिन्न भागों में भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोलते थे। वे शायद अलग–अलग तरह का खाना खाते थे और अलग–अलग तरह के कपड़े भी पहनते थे।

14. मौर्य शासक
(Mourya emperors)

V. चंद्रगुप्त मौर्य:

- मौर्य साम्राज्य भारत का पहला सबसे बड़ा साम्राज्य था। चंद्रगुप्त मौर्य ने मगध में इस साम्राज्य की स्थापना की।
- अपने शासन के अंतिम समय में अपने पुत्र बिन्दुसार को सत्ता सौंपकर चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु नामक जैन भिक्षु के साथ दक्षिण भारत आ गए। चंद्रगुप्त ने श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में सल्लेखना (जैन अनुष्ठान जिसमें एक व्यक्ति अपनी मृत्यु तक उपवास रखता है) विधि से अपना शरीर त्याग दिया।

VI. बिंदुसार:

- बिंदुसार चंदगुप्त का पुत्र थे। इनका वास्तविक नाम सिंहसेन था।
- उसे अमित्रघात (शत्रुओं का नाश करने वाला) के रूप में भी जाना जाता है।
- बिंदुसार को अभिन्न केन्द्रीय या अभिन्न चेटस कहा है।
- अपने शासन काल में बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य कर्नाटक तक विस्तार करने में सफल रहे।
- बिन्दुसार ने अपने पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल नियुक्त किया। उसकी मृत्यु के बाद, अशोक मगध का शासक बने था।

VII.अशोक:

- अशोक, 230 वर्ष पूर्व अपने दादा चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित किए गए मौर्य साम्राज्य के सबसे महान शासक थे। उन्हें अपने शासन के आरम्भिक समय में कौटिल्य का मार्ग दर्शन प्राप्त था। चाणक्य के कई विचार अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में लिखे गए थे।
- अशोक भारत के पहले शासक थे जिन्होंने शिलालेखों के माध्यम से अपने संदेश को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया। ये शिलालेख प्राकृत और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे। उन्हें 'देवनामप्रिय' की उपाधि धारण की थी। जिसका अर्थ है 'देवताओं के प्रिय'।
- **कलिंग युद्ध:** कलिंग तटीय उड़ीसा का प्राचीन नाम था। अशोक ने 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर आक्रमण किया था। जब उन्होंने इस युद्ध में हिंसा और रक्तपात देखा तो वह विचलित हो गया और इसलिए उन्होंने भविष्य में और कोई युद्ध न लड़ने की शपथ ली थी। वह विश्व के इतिहास में एकमात्र राजा थे जिन्होंने युद्ध जीतने के बाद भी अपनी विजय नीति का त्याग कर दिया था। शिलालेख XIII में स्वयं अशोक ने युद्ध की भयावहता का वर्णन किया था।
- **अशोक का धम्म:**
  - 'धम्म' संस्कृत शब्द 'धर्म' के लिए प्रयुक्त प्राकृत भाषा का शब्द है।
  - अशोक के द्वितीय स्तंभ शिलालेख में धम्म का अर्थ समझाया गया है। धम्म में ईश्वर की पूजा या यज्ञ का आयोजन शामिल नहीं था। उन्होंने जनता को सम्बोधित कर कहा कि वे बुद्ध और धम्म में विश्वास करते हैं।
  - अशोक के धम्म में मानवतावाद के सबसे महान विचार निहित थे, जिनमें सभी धर्मो का सार निहित था। उन्होने करुणा, दान, पवित्रता, आत्म–संयम, सत्यता, आज्ञाकारिता और माता–पिता, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान पर जोर दिया गया था।
  - अशोक ने "धम्म महामाल" के नाम के अधिकारियों को नियुक्त किया, जो लोगों को धम्म के बारे में बताने के लिए जगह–जगह जाया करते थे। उनके आदेश स्तंभों पर उत्कीर्ण किए गए थे। उसने अपने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे उसका संदेश उन लोगों के लिए पढ़ें जो इसे स्वयं नहीं पढ़ सकते हैं।
  - अशोक ने अन्य देशों, जैसे सीरिया, मिस्र, यूनान और श्रीलंका में धम्म के प्रसार के लिए दूत भी भेजे। उन्होंने सड़कें बनाई, कुएँ खुदवाए और विश्राम गृहों का निर्माण करवाया तथा मनुष्यों और जानवरों दोनों के लिए चिकित्सालयों की व्यवस्था की।
  - अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र और संघमित्रा को बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए श्रीलंका भी भेजा था तथा उन्होंने धम्म के संदेश को फैलाने के लिए पश्चिम एशिया, मिस्र और पूर्वी यूरोप में अपने धम्म महामात्रों को भेजा था।
  - अशोक ने बौद्ध धर्म में आस्था व्यक्त करने के लिए अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन भी किया था।
- **अशोक के शिलालेख**
  - किसी आधिकारिक व्यक्ति या राजा द्वारा जारी की गई घोषणा को आधिकारिक आदेश कहा जाता है।
  - सम्राट अशोक द्वारा स्तंभों के साथ–साथ शिलाखंडों और गुफा की दीवारों पर उत्कीर्ण करवाए गए 33 शिलालेखों में

शांति, धार्मिकता, न्याय और अपने लोगों के कल्याण के लिए उसकी चिंता का विस्तार से वर्णन किया गया है।

- अशोक के दूसरे तथा तेरहवें शिलालेख में दक्षिणी राज्य पांड्य, चोल, केरल पुत्र और सत्यपुत्र के नामों का उल्लेख है।

15. मौर्य प्रशासन
()

- **केन्द्रीय प्रशासन:**
  - **शासक:**
    - मौर्य साम्राज्य में राजा सर्वोच्च प्राधिकारी हुआ करता था।
    - मंत्रिपरिषद के रूप में जानी जाने वाली संस्था द्वारा प्रशासनिक कार्यों में राजा की सहायता की जाती थी। मंत्रिपरिषद् में एक पुरोहित, एक सेनापति, एक महामंत्री और युवराज शामिल होते थे।
    - राजा के पास एक उत्कृष्ट गुप्तचर प्रणाली भी थी।
  - **प्रांतीय राजधानियाँ–**
    - मौर्य साम्राज्य पाँच प्रान्तों में विभाजित था। इनमें से प्रत्येक की अपनी अपनी राजधानियाँ थी, तक्षशिला, उज्जैयनी, जोगढ़, तोसली आदि प्रमुख राज्य राजधानी नगर थे और राजकुमारों को प्रायः राज्यपालों के रूप में नियुक्त किया जाता था, प्रान्तों में प्रायः स्थानीय रीति–रिवाजों और नियमों का पालन किया जाता था।
  - **राजस्व प्रणाली–**
    - राजधानी पाटलिपुत्र के आसपास का क्षेत्र सम्राट के सीधे नियंत्रण में था। इसका अर्थ था कि क्षेत्र के गांवों और कस्बों में रहने वाले किसानों, चरवाहों, शिल्पकारों और व्यापारियों से कर वसूल करने के लिए रजुक नामक अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।
    - भूमि कर राज्य के राजस्व का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत होता था। लुंबिनी में स्थित अशोक के शिलालेख में जनता से वसूले जाने वाले करों के रूप में बलि और भाग का उल्लेख किया गया है। एकत्र किया गया भूमि कर (भाग) कुल उपज का 1/6 होता था।
    - वनों, खानों, नमक और सिंचाई पर करों से प्राप्त राजस्व द्वारा सरकार को अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होता था।
    - राज्य के राजस्व का अधिकांश भाग सेना, अधिकारियों, दान तथा विभिन्न सार्वजनिक कार्यों जैसे सिंचाई परियोजनाओं, सड़क निर्माण आदि पर खर्च किया जाता था।
  - **न्यायिक प्रणाली:**
    - राजा ही न्यायपालिका का मुखिया होता था। वह अपील का अन्तिम व सर्वोच्च न्यायालय होता था।
    - राजा द्वारा ही न्यायाधीशों को नियुक्त किया जाता था तथा इस समय में न्याय व्यवस्था कठोर थी।
    - शासक के आदेशों की अवहेलना करने वाले अधिकारियों को भी दंडित किया। मौर्य प्रशासन अधिकारी/कर्मचारी प्रायः वैतनिक होते थे।
- **सैन्य प्रशासन:**
  - राजा सेना का सर्वोच्च सेनापति होता था। सेना प्रशासनिक कार्य को समितियों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक में पाँच सदस्य होते थे और जो नौसेना, शस्त्रागार (परिवहन और आपूर्ति), पैदल सेना, घुड़सवार सेना, युद्ध रथ और युद्ध हाथियों की निगरानी करती थी।
- **नगरीय प्रशासन (नगर तथा कस्बे):**
  - 30 सदस्यों का एक बोर्ड छः समितियों में विभाजित था। प्रत्येक समिति में शहर के प्रशासन का प्रबंधन करने के लिए 5 सदस्य हुआ करते थे।
  - नगर प्रशासन नागरिक के अधीन होता था। उसकी स्थानिक और गोप नामक अधीनस्थ कर्मचारियों द्वारा सहायता की जाती थे।
- **स्तूप:** एक स्तूप एक अर्ध–गोलाकार गुंबद जैसी संरचना होती है जिसे ईंट या पत्थर पर बनाया गया था। गुंबद के केंद्र में बुद्ध के अवशेष रखे हुए होते थे।
- **सारनाथ का एकाश्म स्तम्भ:** इस स्तंभ का शीर्ष तत्व धर्म चक्र है।
- **शैलकृत वास्तुकला की शुरुआत– बराबर और नागार्जुन पहाड़ी की शैलकृत गुफाएँ:** बोधगया के उत्तर में कई गुफाएं स्थित हैं। बराबर पहाड़ियों की तीन गुफाओं में अशोक को समर्पित शिलालेख है और नागार्जुन पहाड़ियों की तीन गुफाओं में दशरथ मौर्य (अशोक के पोते) के शिलालेख हैं।
- **मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण:**
  - अशोक के उत्तराधिकारी बहुत आयोग्य और कमजोर होना।
  - साम्राज्य के विभिन्न भागों में लगातार होने वाले विद्रोह।
  - बैक्ट्रियन यूनानियों के आक्रमण ने साम्राज्य को कमजोर कर दिया।
  - दरबार में बढ़ती गुटबाजी और दरबारीयों की शक्ति में वृद्धि।

क्या आप जानते हैं?

★ **नगरों के प्राचीन और आधुनिक नाम**

- राजगृह – राजगीर
- पाटलिपुत्र – पटना
- कलिंग – उड़ीसा

मौर्योत्तर भारत
(Post Mauryan India)

- मौर्य साम्राज्य के पतन के परिणामस्वरूप उत्तर–पश्चिम से शक, सीथियन, पार्थियन, इंडो–यूनानी या बैक्ट्रियन यूनानी और कुषाणों के आक्रमण प्रारम्भ हो गए। दक्षिण में, अशोक की मृत्यु के बाद सातवाहन स्वतंत्र हो गए। गुप्त वंश के उदय से पूर्व उत्तर में शुंग और कण्व शासकों

का आधिपत्य था। साथ ही चेदि (कलिंग) ने भी अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

- यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि, मौर्यो के पतन के बाद मगध भारत का प्रमुख राज्य नहीं रहा था, परन्तु फिर भी यह बौद्ध संस्कृति का एक बड़ा केंद्र बना रहा।
- इस काल में अन्य परिवर्तन भी हो रहे थे, जिसमें जन सामान्य ने प्रमुख भूमिका निभाई। इनमें कृषि का प्रसार और नए शहरों का विकास, शिल्प उत्पादन और व्यापार शामिल थे। व्यापारियों ने उपमहाद्वीप के भीतर और बाहर, और पश्चिम एशिया के समुद्री मार्गो की खोज की।
- इस काल में पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया को भी खोज लिया गया। और कई नए भवनों जैसे मन्दिरों और स्तूपों का निर्माण किया गया। बहुत सारी किताबें लिखी गई और वैज्ञानिक खोजें की गई। ये घटनाक्रम एक साथ, यानी एक ही समय में घटित हुए थे।

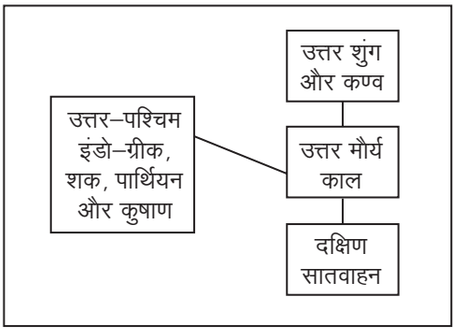

मौर्यात्तर काल का विस्तार

16. उत्तरी क्षेत्र के शुंग

- अंतिम मौर्य सम्राट, बृहद्रथ, की हत्या उसके ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी, और उसने मगध में शुंग वंश की स्थापना की थी। और पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।
- उज्जैन और विदिशा को अपने साम्राज्य में शामिल करने के बाद पुष्यमित्र के राज्य का विस्तार पश्चिम की ओर बढ़ गया। उसने बैक्ट्रिया के राजा, मिलिंद (मिनान्डर) के आक्रमण को सफलतापूर्वक असफल कर दिया। लेकिन मिनान्डर काबुल और सिंध को अपने अधिकार में लेने में सफल रहा। पुष्यमित्र ने कलिंग के राजा खारवेल के आक्रमण को भी विफल कर दिया।
- पुष्य मित्र ने विदर्भ पर भी विजय प्राप्त की। वह वैदिक धर्म का कट्टर अनुयायी था। उसने अपनी सत्ता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए दो अश्वमेध यज्ञ भी आयोजित किए थे।
- पुष्यमित्र का उत्तराधिकारी उसका पुत्र अग्निमित्र हुआ। इस अग्निमित्र कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्र ग्रन्थ का नायक है। नाटक में सिंधु नदी के तट पर यूनानियों पर अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र की विजय का उल्लेख है।
- शुंगों के उत्तरवर्ती कमजोर शासकों को लगातार इंडोबैक्ट्रियन और इंडो–पार्थियन जैसे विदेशी खतरों का सामना करना पड़ रहा था। शुंग वंश का शासन लगभग सौ वर्षों तक चला। अंतिम शुंग शासक देवभूति था। उसे उसके ही मंत्री वासुदेव ने मार डाला था।
- वासुदेव ने एक नवीन वंश कण्व वंश की स्थापना की थी।

क्या आप जानते हैं?

★ कलिंग के राजा खारवेल शुंगों के समकालीन थे। हाथीगुम्फा शिलालेख से हमें खारवेल के बारे में जानकारी मिलती है।

17. उत्तर में कण्व

- कण्व वंश में चार राजाओं ने शासन किया और उनका शासन केवल 45 वर्षो तक चला। कण्वों के पतन के बाद से गुप्त वंश के उदय तक मगध के इतिहास में कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं हुआ। प्रमुख कण्व शासक निम्न थे–
  - ❖ वासुदेव
  - ❖ भूमि मित्र
  - ❖ नारायण
  - ❖ सुशर्मन
- अंतिम कण्व शासक सुशर्मन की हत्या आंध्र के उनके शक्तिशाली सामंत सिमुक ने कर दी और उसने सातवाहन वंश की नींव रखी।

18. दक्षिण में सातवाहन

- उत्तर में कुषाण और दक्षिण में सातवाहन (आंध्र) साम्राज्य क्रमशः लगभग 300 वर्ष और 450 वर्षो तक फलता फूलता रहा। कहा जाता है कि सातवाहन वंश के संस्थापक सिमुक ने तेईस वर्षो तक शासन किया था।
- उसका उत्तराधिकारी उसका भाई कृष्ण था। उसने और उनके भतीजे श्री शातकर्णी ने दस वर्षो तक शासन किया, और साम्राज्य का बड़े पैमाने पर विस्तार किया था। इस प्रकार उन्होंने उत्तर–पश्चिम में राजस्थान से लेकर दक्षिण–पूर्व में आंध्र तक और पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में कलिंग तक एक विशाल क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित किया।
- कहा जाता है कि श्री शातकर्णी ने दो अश्वमेध यज्ञ भी किए थे, जो उनकी शक्ति का प्रतीक था। गौतमीपुत्र शातकर्णी सातवाहन वंश का महानतम शासक था। उनकी माता गौतमी बलश्री द्वारा उत्कार्ण नासिक प्रशस्ति में गौतमीपुत्र शातकर्णी को शकों, यवनों (यूनानियों) और पहलवों (पार्थियों) के संहारक के रूप में वर्णित किया गया है।
- गौतमी पुत्र शातकणों और अन्य सातवाहन शासक दक्षिणापथ स्वामी की उपाधि धारण करते थे, वस्तुतः वह मार्ग जो दक्षिण की ओर जाता था, जिसका उपयोग पूरे दक्षिणी क्षेत्र तक पहुचने के लिये किया जाता था, दक्षिण पथ कहलाता था। उसने अपनी सेना को पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी तटों पर भेजा था।
- नासिक प्रशास्ति में उसके साम्राज्य के विस्तार का भी उल्लेख है। उनके साम्राज्य में महाराष्ट्र, उत्तरी कोंकण, बरार, गुजरात, काठियावाड़ और मालवा के क्षेत्र शामिल थे। उसके जहाज आकृति उत्कार्ण सिक्के आंध्रों की समुद्री यात्रा के कौशल और उनकी नौसैनिक शक्ति के प्रतीक हैं। बोगोर अभिलेखों से पता चलता है कि दक्षिण भारत ने दक्षिण पूर्व एशिया में प्रारंभिक राज्य गठन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

क्या आप जानते हैं?

★ बुद्ध की विश्व–प्रसिद्ध आदमकद (विशाल) प्रतिमाएँ बामियान घाटी में मिली हैं और यह घाटी प्राचीन भारत के पूर्व उत्तर–पश्चिमी सीमाओं (वर्तमान में मध्य अफगानिस्तान में स्थित थी जिन्हें तालिबान द्वारा कुछ वर्षों पूर्व नष्ट कर दिया गया) के पहाड़ों पर

स्थित है। मौर्योत्तर काल के दौरान गांधार कला विद्यालय के समर्पित कलाकारों द्वारा इन मूर्तियों को ठोस चट्टानों से उकेरा गया था।

19. इंडो–यूनानी, इंडो–पार्थियन, शक और कुषाण

- **इंडो–यूनानी और इंडो–पार्थियन :**
  - उत्तर–पश्चिमी भारत और पंजाब क्षेत्र की विजय के बाद, सिकंदर महान ने विजित क्षेत्रों को अपने प्रांतीय गवर्नरों के अधीन छोड़ दिया। बैक्ट्रियन और पार्थियन दो पूर्वी क्षत्रपों ने अपने यूनानी गवर्नरों के अधीन विद्रोह कर दिया और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
  - बैक्ट्रिया, डायोडोटस प्रथम के नेतृत्व में और पार्थिया, आर्सेस के नेतृत्व में स्वतंत्र हो गए। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, बैक्ट्रिया और पार्थिया के यूनानी शासकों ने भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा की भूमि में अतिक्रमण करना शुरू कर दिया।
  - बैक्ट्रियन और पार्थियन धीरे–धीरे अंतर्विवाहित होने लगे और स्वदेशी आबादी के साथ मिश्रित हो गए। इसने भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग के साथ इंडो–ग्रीक और इंडोपार्थियन उपनिवेशों की स्थापना हुई।
- **भारत–यूनानियों का योगदान :**
  - **सिक्के :** भारत–यूनानी शासकों ने सिक्का मुद्रण की ने एक नई प्रणाली की शुरुआत की और उन्होंने भारत में पहली बार प्रतीक चिन्ह आकृति उत्कीर्ण एक लेखा सिक्के चलवाये थे। भारतीयों ने उनसे ही इस कला को ग्रहण किया।
  - **मूर्ति :** कला में गांधार कला शैली का महत्वपूर्ण योदान है, शैली यूनानी कला शैली से प्रभावित थी। यूनानी अच्छे गुफा निर्माता थे। महायान बौद्धों ने उनसे गुफाओं को तराशने की कला सीखी और इस प्रकार वे शैलकृत वास्तुकला में निपुण हो गए।

क्या आप जानते हैं?

★ **मिनान्डर :** वह सबसे प्रसिद्ध इंडो–यूनानी शासकों में से एक था। कहा जाता है कि उसने भारत के उत्तर–पश्चिम में एक बड़े राज्य पर शासन किया था। उसके सिक्के काबुल घाटी और सिंधु नदी से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक विस्तृत क्षेत्र में पाए गए हैं। मिलिंदपन्हो, एक बौद्ध ग्रंथ है जिसमें बैक्ट्रियन राजा मिलिंद मिनान्डर और विद्वान बौद्ध विद्वान नागसेन के बीच एक संवाद का वर्णन किया गया है। विद्वानों ने मिलिंद की पहचान मिनान्डर से की है। माना जाता है कि मिनान्डर बौद्ध विद्वान नागसेन के प्रभाव में आकर बौद्ध अनुयायी हो गया था और उसने बौद्ध धर्म का प्रसार भी किया।

- **शक :**
  - भारत में इंडो–यूनानी शासन शकों द्वारा समाप्त कर दिया गया। खानाबदोशों के रूप में शक बड़ी संख्या में भारत आए और पूरे उत्तरी और पश्चिमी भारत में फैल गए।
  - सीथियन लोग, खानाबदोश प्राचीन ईरानी थे जो संस्कृत में शक के रूप में जाने जाते थे। शक शासन की स्थापना गांधार क्षेत्र में मेउस या मोगैन के द्वारा की गई थी और उसकी राजधानी 'सिरकप' थी। उसका नाम का उल्लेख मोरा (मथुरा), अभिलेख में मिलता है। उनके सिक्कों पर बुद्ध और शिव के चित्र अंकित हैं।
  - रुद्रदामन शकों का सबसे महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध राजा था। उनका जूनागढ़ / गिरनार शिलालेख विशुद्ध संस्कृत में उत्कीर्ण पहला शिलालेख था। भारत में शकों को भारतीय समाज में आत्मसात कर लिया गया। वे भारतीय नामों को अपनाने लगे और भारतीय धार्मिक मान्यताओं का पालन करने लगे।
  - शकों ने अपने क्षेत्रों का प्रशासन करने के लिए क्षत्रपों को प्रांतीय राज्यपालों के रूप में नियुक्त किया था।

क्या आप जानते हैं?

★ **इंडो–पार्थियन (पहलव) शासक :** इंडो–पार्थियन, इंडो–यूनानियों और इंडो–सीथियन के बाद आए, वे पहली शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में कुषाणों द्वारा पराजित हो गए थे। इंडो–पार्थियन साम्राज्य या गोंडोफर्नीज राजवंश की स्थापना गोंडोफर्नीज ने की थी। इंडो–पार्थियन के साम्राज्य में काबुल और गांधार शामिल थे। गोंडोफर्नीज का नाम प्रसिद्ध ईसाई सेंट थश्वमस के साथ जुड़ा हुआ है। ईसाई परंपरा के अनुसार, सेंट थॉमस ने गोंडोफर्नीज के समय भारत का दौरा किया था और उन्होंने ईसाई धर्म का प्रचार एवं प्रसार किया था और उन्हीं के प्रभाव में आकार गोंडोफर्नीज ने ईसाई धर्म अपना लिया था।

- **कुषाण :**
  - कुषाणों यूची कबीले से सम्बन्धित थे, जो अतीत में सुदूर उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र चीन में निवास करते थे। पहली शताब्दी ईसा पूर्व में, यूची कबीला पॉच कबीलों का प्रमुख था, जिनमें से कुषाणों ने दूसरों पर राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया।
  - प्रथम शबाब्दी ई. तक, सभी यूची कबीलों ने कुषाणों की सर्वोच्चता को स्वीकार कर लिया था। उन्होंने अपनी खानाबदोश आदतों को त्याग दिया था और वे भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा से सटे बैक्ट्रियन और पार्थियन क्षेत्र में बस गए थे।
  - कुषाणों ने बैक्ट्रिया और पार्थिया पर कब्जा करने के बाद धीरे–धीरे खुद को उत्तरी भारत में स्थापित कर लिया। उनका संकेन्द्रण ज्यादातर पंजाब, राजपुताना और काठियावाड़ क्षेत्रों में था। कुषाण शासक बौद्ध अनुयायी थे।
  - कुषाणों के समय तक्षशिला और मथुरा बौद्ध शिक्षा के महान केंद्र बने रहे और चीन तथा पश्चिमी एशिया के छात्र इन सस्थानों की ओर आकर्षित होते थे।
  - **कुषाण शासक :**
    - **कनिष्क :** कनिष्क सभी कुषाण सम्राटों में सबसे महान था। वह 78 ईस्वी में स्वतंत्र शासक बना और एक नए संवत की नींव से उसने शासन की शुरुआत की, जो बाद में शक युग बन गया। कुषाण की राजधानी शुरू में कंधार थी। बाद में, इसे पेशावर या पुरुषपुर में स्थानांतरित कर दिया गया।

- **कनिष्क की विजय :**
  - कनिष्क ने कश्मीर को जीत कर उसे अपने अधिकार में ले लिया। उसने मगध के विरुद्ध एक सफल अभियान शुरू किया। उसने पश्चिमी और दक्षिण–पश्चिमी सीमा पर अपने विशाल साम्राज्य में सुरक्षा और अखंडता बनाए रखने के लिए पार्थिया के एक शासक के खिलाफ भी अभियान करना पड़ा था।
  - कश्मीर और गांधार की विजय के बाद उसने अपना ध्यान चीन की ओर केन्द्रित किया। उसने चीनी सेनापति पान–चियांग को हराया और चीनी अतिक्रमण से भारत की उत्तरी सीमाओं की रक्षा की।
  - उसका साम्राज्य कश्मीर से लेकर पूर्व में वाराणासी और दक्षिण में विंध्य पर्वत तक फैला हुआ था। उसके सामाज्य में फारस और पार्थिया की सीमाओं को छूने वाले काशगर, यारकंड भी शामिल थे।
- केले कुजुल कडफिसेस के नामक से जाना जाता है। **कडफिसेस प्रथम** वह कुषाणों का पहला प्रसिद्ध शक्तिशाली शासक था। उसने इंडो–ग्रीक और इंडो–पार्थियन शासकों को उखाड़ फेंका और खुद को बैक्ट्रिया के एक संप्रभु शासक के रूप में स्थापित किया। उसने काबुल, गांधार और सिंधु तक अपनी शक्ति का विस्तार किया।
- **कडफिसेस द्वितीय :** इसे विम कडफिसेस के नाम से जाना जाता है। उसने चीन और रोम के सम्राटों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे और विदेशों के साथ व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहित किया। उसके कुछ सिक्कों में भगवान शिव की आकृतियाँ अंकित थी और उसकी शाही उपाधियाँ खरोष्ठी भाषा में अंकित की गई थी।

क्या आप जानते हैं?

- ★ कुषाण साम्राज्य रोमन गणराज्य के उस काल के समकालीन था, जब जूलियस सीजर जीवित था। ऐसा कहा जाता है कि कुषाण सम्राट ने ऑगस्टस सीजर के पास एक दूत मंडल भी भेजा था।
- ★ अश्वघोष कनिष्क के समय के प्रसिद्ध संस्कृत नाटक बुद्धचरित के प्रसिद्ध लेखक थे।

संगम युग और दक्षिण भारतीय साम्राज्य
(Sangam age and South Indian Empire)

20. संगम युग

- 'संगम' शब्द उन कवियों के संघ को संदर्भित करता है जो मदुरै में पांड्य राजाओं के राजकीय संरक्षण में फले–फूले थे। इन कवियों द्वारा रचित कविताओं को सामूहिक रूप से संगम साहित्य के रूप में जाना जाता है। जिस काल में इन कविताओं की रचना की गई, उसे संगम युग कहा जाता है।
  - **समय अवधि:** तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक।
  - **तमिझगम:** उत्तर में वेंगादम (तिरुपति पहाड़ी) से दक्षिण में कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) तक तथा पूर्व और पश्चिम में समुद्र से घिरा हुआ क्षेत्र।
  - **काल:** लौह युग
  - **संस्कृति:** महापाषाणिक
  - **राजव्यवस्था:** राजतंत्र
  - **राजवंश जिन्होंने शासन किया:** चेर, चोल और पांड्य
- **स्रोत:**
  - **शिलालेख :** कलिंग के राजा खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख, पुगलूर (करूर के पास) शिलालेख, अशोक का दूसरा तथा तेरहवा शिलालेख, और मंगुलम, अलगरमलाई तथा कीलावलवु (सभी मदुरै के पास) में पाए गए शिलालेख हैं।
  - **ताम्र पट्ट :** वेल्विकुडी और चिन्नामनूर ताम्र पट्ट।
  - **सिक्के :** चेरों, चोल, पांड्यों और संगम युग के शासकों तथा रोमनों द्वारा जरी किए गए सिक्के।
  - **महापाषाण स्मारक :** समाधि और प्रस्तरलेख।
  - **उत्खनन सामग्री :** आदिचनल्लूर, अरिकामेडु, कोडुमानल, पुहार, कोरकाई, अलगनकुलम, उरैयूर से उत्खनित सामग्री।
  - **साहित्यिक स्रोत :** तोलकप्पियम, एट्टुथोगाई (आठ संकलन), पाथुपट्टू (दस मूर्तियाँ), पथिनेन कीज कनक्कू (अठारह काव्य रचनाओं का संग्रह), पट्टिनप्पलई और मदुरैकांजी तथा सिलप्पादिकरम और मणिमेखलै महाकाव्य ।
  - **विदेशी लेख :** पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी, प्लिनी का नेचुरल हिस्ट्री, टॉलेमी का जियोग्राफी, मेगस्थनीज की इंडिका, राजावली, महावंश और दीपवंश।

क्या आप जानते हैं?

- ★ तोलकप्पियम तमिल व्याकरण पर आधारित एक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ तमिल भाषा साहित्य और तमिल लोगों की संस्कृति को प्रदर्शित करती है।
- ★ कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में तमिल भाषा के प्रोफेसर जॉर्ज एल. हार्ट ने कहा है कि तमिल लैटिन जितनी पुरानी है। यह भाषा अन्य भाषाओं के प्रभाव के बिना एक पूरी तरह से स्वतंत्र परंपरा के रूप में उभरी है।

21. दक्षिण भारतीय राज्य

I. चेर –

- चेरों ने तमिलनाडु के मध्य और उत्तरी त्रावणकोर, कोचीन, दक्षिण मालाबार और कोंडगु क्षेत्रों पर शासन किया था। पथित्रपथु (दस दशकों के छंदों का संग्रह) से चेर राजाओं के बारे में जानकारी मिलती है।
- यह ज्ञात हो कि चेर राजा शेनगुट्टवन ने उत्तर भारत के लिए एक सैन्य अभियान किया था। वह कन्नगी की मूर्ति बनाने के लिए हिमालय से पत्थर लाए थे, जो सिलप्पादिकरम महाकाव्य का एक पात्र था। उसने पट्टिनी पंथ की शुरुआत की थी।
- इलांगो अदिगल, चेरन शेनगुट्टवन का छोटा भाई था। वे सिलप्पादिकरम का लेखक भी था। एक अन्य चेर राजा, चेरल इरुम्पोराई ने उसके नाम पर सिक्के जारी किए थे। कुछ चेर सिक्कों पर धनुष–बाण का चिन्ह बना हुआ है।
- **प्रमुख चेर शासक निम्न थे:**
  - उदयन चेरालाथन (जेलियन)
  - इमायावरम्बन नेदुन चेरालाथन (जेलियन)
  - चेरन शेनगुट्टवन
  - चेरल इरुम्पोराई

II. चोल –

- संगम काल का चोल साम्राज्य वेंकटम (तिरुपति) पहाड़ियों तक फैला हुआ था। कावेरी डेल्टा क्षेत्र इस राज्य का मध्य भाग था। इस क्षेत्र को बाद में चोलामंडलम के नाम से जाना गया। करिकलवलवन या करिकाल चोल राजाओं में सबसे प्रसिद्ध थे।
- करिकाल ने चेरों, पांड्यों और ग्यारह वेलिर शासकों की संयुक्त सेना को हराया, जिन्होंने तंजावुर क्षेत्र के एक छोटे से गाँव वेन्नी को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास किया था। उसने वनों को कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित किया। उसने कृषि को विकसित करने के लिए कावेरी नदी के पार कल्लनई (अर्थात् पत्थर से बना बांध) का निर्माण भी करवाया था।
- हिंद महासागर के विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारियों के लिए उसका बंदरगाह पुहार आकर्षण का केन्द्र था। पथिनन कीज कनक्कू की एक काव्य कृति, पट्टिनापलाई, करिकालन के शासन के दौरान की व्यापारिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी देती है।
- प्रमुख चोल शासक निम्न थे:
  - इलांचेटसेनिवन
  - करिकलवलवन
  - कोकेंगन्नान (कोच्च/गनान)
  - किल्ली वलवन
  - पेरुनार्किली

क्या आप जानते हैं?

★ **कल्लनई:** यह एक बांध होता था, जिसे पत्थरों से बनाया गया था। इसका निर्माण कावेरी डेल्टा क्षेत्र में जल धारा को मोड़ने और सिंचाई के लिए किया गया था। जब इसे बनाया गया था, तब कल्लनई बाँध से लगभग 69,000 एकड़ क्षेत्र में सिंचाई की जाती थी।

III. पांड्य –

- पांड्यों ने वर्तमान दक्षिणी तमिलनाडु पर शासन किया था। पांड्य राजाओं ने तमिल कवियों और विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया था। संगम साहित्य में अनेक पांड्य राजाओं के नामों का उल्लेख मिलता है। नेदुनचेझियान (नेदुनओलियन) को सबसे प्रसिद्ध योद्धा के रूप में जाना जाता है। उसने तलयालंगनम में चेर, चोल और पाँच वेलिर सरदारों की संयुक्त सेना को हराया था।
- कोरकाई के स्वामी के रूप में नेदूनजेलियम की प्रशंसा की जाती है। पांड्य देश मोतीयों के लिए प्रसिद्ध था। पांड्य राजाओं ने कई सिक्के जारी किए थे। उनके सिक्कों में एक तरफ हाथी और दूसरी तरफ मछलियां अंकित होती थी। पाण्डया शासक मुदुकुडिमी पेरुवाजुथी ने कई वैदिक अनुष्ठानों के आयोजन के समय सिक्के भी जारी किए थे।
- प्रमुख पांड्या शासक निम्न थे:
  - नेडियोन
  - नानमारनी
  - मुदुकुडुमी पेरुवाजुथि
  - नेदुनचेझियान

22. उत्तरवर्ती चोल
()

- **चोल शासन का पुनरुद्धार:**
- प्राचीन चोल साम्राज्य ने कावेरी डेल्टा के सहारे अपने शासन के मुख्य क्षेत्र का निर्माण किया और उरैयूर (वर्तमान तिरुचिरापल्ली) को अपनी राजधानी बनाया। करिकाल के शासनकाल के दौरान इसमें और वृद्धि हुई लेकिन उसके उत्तराधिकारियों के अधीन इस साम्राज्य का पतन होने लगा। 9वीं शताब्दी में, कावेरी के उत्तर में स्थित एक छोटे से क्षेत्र पर शासन करने वाले विजयालय ने चोल राजवंश को पुनर्जीवित किया।
- उसने तंजावुर पर विजय प्राप्त की और उसे अपनी राजधानी बनाया। बाद में राजेंद्र प्रथम और उनके उत्तराधिकारियों ने नव निर्मित राजधानी गंगईकोंडा चोलपुरम से इस साम्राज्य पर शासन किया।
- **राजराज प्रथम (985 – 1016 ईस्वी):**
  - वह चोल साम्राज्य का सबसे शक्तिशाली और महानतम शासक था जो अपने शासन काल के बाद भी अपने शासित क्षेत्र में लोकप्रिय रहा।
  - उसने दक्षिण भारत के बड़े हिस्से पर चोल आधिपत्य स्थापित किया। उसके बहुप्रशंसित नौसैनिक अभियानों के कारण चोलों का पश्चिमी तट और श्रीलंका पर अधिकार हो गया।
  - उसने तंजावुर में प्रसिद्ध राजराजेश्वर (बृहदेश्वर) मंदिर का निर्माण कराया। उसका पुत्र और उत्तराधिकारी, राजेंद्र चोल प्रथम (1016 – 1044 ईस्वी), साम्राज्य का विस्तार करने की उसकी क्षमता अपने पिता के ही समान ही थी।

- चोल साम्राज्य उसके शासनकाल के दौरान दक्षिण भारत में सबसे बड़ी शक्ति बना रहा। 1023 ईस्वी बाद, उसने उत्तरी भारत में अपना विशिष्ट सैन्य अभियान भेजा, और यहाँ के बहुत बड़े क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इस सफल अभियान के बाद उसने गंगईकोंड (गंग क्षेत्र का विजेता) की उपाधि धारण की थी।
- राजेन्द्र ने गंगईकोंड चोलपुरम मंदिर निर्माण उत्तर भारत में उसकी जीत के उपलक्ष्य में बनाया गया था। राजेंद्र चोल ने अपनी नौसेना के बल पर श्रीविजय (दक्षिणी सुमात्रा) के राज्य को विजित किया। समुद्र पर चोलों के नियंत्रण के कारण ही विदेशी व्यापार भी फलने–फूलने लगा था।

- **चोल साम्राज्य का पतन:**
  - राजेंद्र चोल के बाद के तीन उत्तराधिकारी सक्षम और योग्य शासक नहीं थे। उसके बाद के तीसरे शासक वीर राजेंद्र के बेटे अधिराजेंद्र नागरिक विद्रोह में मारे गए थे। उनकी मृत्यु के साथ चोलों के विजयालय वंश की समाप्ति हो गई।
  - अधिराजेंद्र की मृत्यु के बाद उनका निकट सम्बन्धी, पूर्वी चालुक्य राजकुमार राजेंद्र चालुक्य ने चोल सिंहासन पर कब्जा कर लिया और कुलोतुंग प्रथम के नाम से चालुक्य–चोल वंश का शासन शुरू किया।
  - कुलोतुंग ने चोल साम्राज्य के लिए सभी संभावित खतरों को समाप्त करते हुए चोल सिंहासन पर खुद को मजबूती से स्थापित कर लिया। उसने अनावश्यक युद्धों से परहेज किया और अपनी प्रजा की सद्भावना अर्जित की। लेकिन कुलोतुंग ने सीलोन श्रीलंका के क्षेत्र खो दिए थे।
  - पांड्य क्षेत्र भी चोल नियंत्रण से खिसकने लगा था। वर्ष 1279 को चोल वंश के अंत का प्रतीक माना जाता है क्योंकि इस वर्ष राजा मारवर्मन कुलशेखर पांडियन प्रथम ने चोल वंश के अंतिम राजा राजेंद्र चोल तृतीय को हराया और वर्तमान तमिलनाडु में पांड्यों का शासन स्थापित किया।

23. उत्तरवर्ती पांड्य शासक
()

- पांड्य तीन प्राचीन तमिल राजवंशों में से एक थे जिन्होंने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व (बीसीई) के बाद से दक्षिण भारत पर शासन किया था, लेकिन निरन्तर सत्ता के केन्द्र में नहीं रहे। कोरकाई नगर को उनकी प्रारंभिक राजधानी और बंदरगाह माना जाता है।
- पांड्य शासक वे बाद में मदुरै चले गए, क्योंकि पांड्यों के कई प्रारंभिक शिलालेख मदुरै और उसके आसपास के क्षेत्रों में पाए गए हैं। संगम युग के पांड्य राजाओं के अधीन, मदुरै तमिल संस्कृति का एक बड़ा केंद्र था।
- तमिल भाषा के कवि और लेखक मदुरै में एकत्र होते थे और तमिल ग्रंथों के विकास में योगदान देते थे। पांड्यों ने कालभ्रों के शासन को समाप्त करने के बाद, छठी शताब्दी ईस्वी के अंत तक दक्षिण तमिलनाडु में अपनी स्थिति को फिर से मजबूत कर ली था।
- लेकिन वे उन उत्तरवर्ती चोलों की बढ़ती शक्ति का विरोध नहीं कर सके जिन्होंने 9वीं से 13वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत पर शासन किया था। तत्पश्चात चोल शक्ति के पतन का लाभ उठाते हुए, उत्तरवर्ती पांड्यों ने दक्षिण में अपना अधिकार पुनः स्थापित किया। इनका शासन 16वीं शताब्दी तक चलता रहा।

- **पांड्य साम्राज्य का पुनरुद्धार (600 – 920 ईस्वी):**
  - कडुंकों ने छठी शताब्दी के अंत में कालभ्र से पांड्य क्षेत्र को पुनः प्राप्त कर लिया। उसके बाद दो अन्य लोग शासक बने। उनके बाद अरिकेसरी मारवर्मन पहले सशक्त पांड्य शासक थे जिन्होंने 642 ईस्वी में सिंहासन ग्रहण किया था।
  - मारवर्मन पल्लव शासक महेंद्रवर्मन प्रथम और नरसिंहवर्मन प्रथम के समकालीन थे। शिलालेख और ताम्र पट्टों में उनकी अपने समकक्षों यथा चेर, चोल, पल्लव और सिंहलों पर उनकी जीत का वर्णन किया गया है। अरिकेसरी मारवर्मन की पहचान जैनियों के उत्पीड़क कुन पांडियन के रूप में की जाती है।
  - अरिकेसरी के बाद, इस राजवंश में सबसे महान शासक जतिल परान्तक नेदुंजदयान (वरगुण प्रथम) (756–815 ईस्वी) था जिसे वेल्विकुडी पट्ट का दाता माना जाता था। नेदुंजदयान ने तंजावुर, तिरुचिरापल्ली, सलेम और कोयंबटूर जिलों को शामिल करके पांड्य क्षेत्र का विस्तार किया था।
  - नेदुंजदयान के उत्तराधिकारी श्रीमर श्रीवल्लभ और वरगुण द्वितीय, पल्लवों द्वारा क्रमिक रूप से पराजित हुए। बाद में वे परान्तक प्रथम के अधीन विकिसत हो रहे चोल वंश का सामना नहीं कर सके। परान्तक प्रथम ने पांड्य राजा राजसिम्हा द्वितीय को पराजित किया था जो 920 ईस्वी में देश छोड़कर भाग गया था। इस प्रकार कडुंगन द्वारा पुनर्जीवित पांड्य शासन एक बार फिर समाप्त हो गया।

- **उत्तरवर्ती पांड्यों का उदय (1190 – 1310 ईस्वी):**
  - अधिराजेंद्र (विजयालय वंश के अंतिम राजा) की मृत्यु के बाद पाड्य देश में चोल वंश कमजोर हो गया। अंततः पांड्य साम्राज्य 13वीं शताब्दी में एक बार पुनः प्रमुख तमिल राजवंश के रूप में उभर सका।
  - 13वीं शताब्दी में भी मदुरै उनकी राजधानी बनी रही। अब कयाल उनका प्रमुख बंदरगाह था। वेनिस (इटली) के एक प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो ने 1288 और 1293 में दो बार कयाल का दौरा किया। वह हमें बताता है कि यह बंदरगाह शहर अरब और चीन के जहाजों से भरा हुआ था और यहाँ बहुत अधिक व्यापारिक गतिविधिया होती थी।

क्या आप जानते हैं?

★ मार्को पोलो ने पांड्य साम्राज्य को 'दुनिया का सबसे समृद्ध और सबसे शानदार प्रांत' कहा। उन्होंने कहा, कि सीलोन के अलावा यहाँ 'दुनिया में पाए जाने वाले अधिकांश रत्नों और मोतियों का उत्पादन होता था'। अपने यात्रा विवरण में उन्होंने सती और राजाओं द्वारा प्रचलित बहुविवाह की घटनाओं का वर्णन भी किया था।

- **सदेयावर्मन सुंदरपांडियन:**
  - दूसरे पांड्य साम्राज्य के प्रसिद्ध शासक सदैयावर्मन (जाटवर्मन) सुंदरपांडियन (1251 से 1268 ईस्वी) थे। उसने पूरे तमिलनाडु, जो आंध्र में नेल्लोर तक फैला हुआ था, को अपने अधिकार में ले लिया था। उन्होंने होयसलों को भी नियंत्रण में रखा था।
  - मलनाडु के प्रमुख चेर शासक ने अपनी सामंती स्थिति को स्वीकार कर लिया और सुंदरपांडियन को भेंटें अर्पित की। चोल राज्य के पतन

से उत्साहित होकर मालवा क्षेत्र के राजा सोमेश्वर ने सुंदरपांडियन को चुनौती दी।

- कन्ननूर में एक युद्ध में, सुंदरपांडियन ने सोमेश्वर को पराजित कर दिया था। सुंदरपांडियन उत्तरी तमिलनाडु में कुड्डालोर (कुण्डलूर), कांचीपुरम, पश्चिमी क्षेत्र में अरकोट और सलेम के सरदारों पर अपना अधिकार स्थापित करने में सफल रहे।
- सुंदरपांडियन के साथ–साथ विक्रम पांडियन और वीरपांडियन भी शासन करने वाले दो सह–शासक थे। सुंदरपांडियन के बाद, मारवर्मन कुलशेखरन ने देश को शांति और समृद्धि प्रदान करते हुए 40 वर्षों तक सफलतापूर्वक शासन किया।
- कुलशेखरन के दो बेटे थे। उसके द्वारा वीरपांडियन को सह–प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त करने से दूसरा पुत्र सुंदरपांडियन नाराज हो गया और उसने पिता मारवर्मन कुलशेखरन की हत्या कर दी। इसके बाद हुए गृहयुद्ध में वीरपांडियन जीत गया और अपने राज्य को सशक्त कर लिया। पराजित सुंदरपांडियन दिल्ली भाग गया और अला–उद–दीन खिलजी के संरक्षण में दिल्ली में शरण ली।
- इससे मलिक काफूर के आक्रमण का मार्ग प्रशस्त हो गया। मलिक काफूर के आक्रमण के बाद, मुख्य पांड्य साम्राज्य के कई शासकों में विभाजित हो गया। अंततः मदुरै में दिल्ली सुल्तान के अधीन एक मुस्लिम राज्य की स्थापना हो गई।

24. पल्लव
()

- पल्लव सातवाहनों के सामंत थे। पल्लव राजाओं ने भारत के दक्षिण–पूर्वी तट पर समृद्ध कृषि बस्ती और कांचीपुरम के महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र काँचीपुरम के आसपास शासन किया था। कांचीपुरम चीनी और रोमन व्यापारियों के कारण अच्छी तरह से जाना जाता था।
- कांचीपुरम के फलते–फूलते व्यापार केंद्र से, बाद के पल्लवों ने 7वीं और 8वीं शताब्दी के दौरान सभी तमिल भाषी क्षेत्रों पर अपनी संप्रभुता का विस्तार किया। हालाँकि, उनके राज्य का मध्य भाग थोंडईमंडलम था, जो एक बड़ा राजनीतिक क्षेत्र था, जिसमें तमिलनाडु के उत्तरी भाग और आस–पास के आंध्र जिले शामिल थे।
- **पल्लव वंशावली (प्रमुख शासक):**
  - सिंहवर्मन द्वितीय (लगभग 550 ईस्वी) के पुत्र सिंहविष्णु ने कालभ्रों को समाप्त करने के बाद एक मजबूत पल्लव साम्राज्य स्थापित किया। उसने चोल और पांड्य समेत दक्षिण में कई राजाओं को भी पराजित किया था।
  - उनका सुयोग्य उत्तराधिकारी महेंद्रवर्मन प्रथम था। उनका पुत्र नरसिंहवर्मन प्रथम उनका उत्तराधिकारी बना। अन्य प्रमुख पल्लव शासक नरसिंहवर्मन द्वितीय या राजसिंह और नंदीवर्मन द्वितीय थे। अंतिम पल्लव शासक अपराजित था।
  - **महेंद्रवर्मन [600–630 ईस्वी]:**
    - महेन्द्रवर्मन ने पल्लव साम्राज्य को महान बनाने में योगदान दिया। महेंद्रवर्मन प्रथम अपने शासन के शुरुआती दौर में जैन धर्म का अनुयायी था। उसे शैव संत अप्पार (तिरुनावुक्कारासर) द्वारा शैव धर्म में परिवर्तित कर दिया गया था। वह कला और स्थापत्य का महान संरक्षक था।
    - उसे द्रविड़ वास्तुकला में एक नई शैली प्रस्तुत करने के लिए जाना जाता है, जिसे श्महेंद्र शैलीश कहा जाता है। महेंद्रवर्मन ने संस्कृत में (620 ईस्वी) मत्तविलासप्रहसन (द डिलाइट ऑफ द ड्रंकर्ड्स) नाटक भी लिखा, जो बौद्ध धर्म की आलोचना करता है।
    - महेंद्रवर्मन के शासनकाल में पुलकेशिन द्वितीय के अधीन बादामी के पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य के साथ लगातार युद्ध हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि पुलकेशिन ने महेंद्रवर्मन को एक युद्ध में पराजित किया था और उत्तर में एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था।
    - महेंद्रवर्मन के पुत्र नरसिंहवर्मन प्रथम (630–668 ईस्वी) ने चालुक्यों की राजधानी वातापी पर कब्जा करके हार का बदला लिया। तथा उसने वातापी नगर में आग लगा दी, इस घटना में चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय की मौत हो गई।
    - परनजोथी नरसिंहवर्मन प्रथम के सेनापति थे। उन्हें लोकप्रिय रूप से सिरुतोंदर (63 नयनारों में से एक) के रूप में जाना जाता था। उन्होंने वातापी के आक्रमण के दौरान पल्लव सेना का नेतृत्व किया। जीत के बाद उनका हृदय परिवर्तन हुआ और उन्होंने खुद को भगवान शिव को समर्पित कर दिया।
- **नरसिंहवर्मन II (695–722 ईस्वी):** इसे राजसिम्हा के नाम से भी जाना जाता है, एक महान सैन्य रणनीतिकार था। उसने चीन के साथ राजदूतों का आदान–प्रदान किया। उनका शासन किसी भी राजनीतिक अशांति से तुलनात्मक रूप से मुक्त था। इसलिए, वह मंदिर निर्माण गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित कर पाया। उनके शासनकाल के दौरान कांचीपुरम में प्रसिद्ध कैलासनाथ मंदिर का निर्माण किया गया था।

पल्लव राजा और उनकी उपाधियाँ	
पल्लव राजा	**उपाधियाँ**
सिंहविष्णु	अवनिसिम्हा
महेंद्रवर्मन प्रथम	संकीर्ण जाति मतविलासा गुणभारः चित्रकारपुली विचित्र चित्त
नरसिंहवर्मन प्रथम	मामल्लान वातापी कोंडन

- **राजसिम्हा शैली (संरचनात्मक मंदिर):** नरसिंहवर्मन द्वितीय, जिसे राजसिम्हा के नाम से भी जाना जाता है, ने पत्थर के बड़े खण्डों का उपयोग करके एकाश्म मंदिरों का निर्माण किया। एकाश्म मंदिर के लिए सबसे अच्छा उदाहरण कांचीपुरम में कैलासनाथ मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण बड़े खण्ड पत्थरों से किया गया है। कैलासनाथ मंदिर को राजसिंहेश्वरम मंदिर भी कहा जाता है।
- **नंदीवर्मन शैली (संरचनात्मक मंदिर):** पल्लव वास्तुकला के अंतिम चरण को बाद के पल्लवों द्वारा निर्मित एकाश्म मंदिरों द्वारा भी दर्शाया गया है। सबसे अच्छा उदाहरण कांचीपुरम में वैकुंड पेरुमल मंदिर है।

25. चालुक्य
()

- चालुक्यों ने पश्चिम के बड़े हिस्से और दक्षिण भारत के केंद्र पर शासन किया, जिसमें वातापी (बादामी) के साथ मराठा प्रदेश शामिल था। इस काल में तीन अलग–अलग लेकिन निकट से संबंधित और स्वतंत्र चालुक्य राजवंश थे। ये वंश थे – बादामी के चालुक्य, वेंगी के चालुक्य (पूर्वी चालुक्य) और (3) कल्याणी के चालुक्य (पश्चिमी चालुक्य)। इन चालुक्यों के उत्तर में हर्ष, दक्षिण में पल्लव और पूर्व में कलिंग (ओडिशा) राज्य थे।
- **बादामी/वातापी के चालुक्य:**
  - बीजापुर जिले में पट्टाडकल के एक छोटे से सामन्त पुलकेशिन प्रथम ने लगभग 543 ईस्वी के आसपास वातापी के पहाड़ी किले को अधिकार में ले लिया और अपनी स्थिति को मजबूत किया। उसने जल्द ही कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों और पश्चिमी घाट के बीच के क्षेत्र को जीत लिया।
  - उसका पुत्र कीर्तिवर्मन प्रथम (566 से 597 ईस्वी) कोंकण तट को चालुक्य नियंत्रण में ले आया। पुलकेशिन द्वितीय (610 से 642 ईस्वी) इस राजवंश के सबसे शक्तिशाली शासक के रूप में उभरा। फारस (ईरान) के राजा खुसरू द्वितीय ने एक दूत को पुलकेशिन द्वितीय के दरबार में भेजा था।
  - पुलकेशिन द्वितीय गुजरात और मालवा के कुछ हिस्सों पर कब्जा करने में सफल रहा। उसने उत्तर भारतीय शासक हर्ष को चुनौती दी और एक सहमति के अनुसार नर्मदा नदी को दोनों के क्षेत्रों बीच की सीमा के रूप में तय किया गया था। 624 ईस्वी के आसपास, पुलकेशिन द्वितीय ने वेंगी के राज्य पर विजय प्राप्त की और इसे अपने भाई विष्णुवर्धन को दे दिया, जो प्रथम पूर्वी चालुक्य शासक था।
  - 641–647 ईस्वी के दौरान पल्लवों ने दक्कन को पूरी तरह अधिकार में ले लिया और वातापी पर कब्जा कर लिया, लेकिन चालुक्यों ने इस पर 655 ईस्वी तक पुनः कब्जा कर लिया था। विक्रमादित्य प्रथम (655 से 680 ईस्वी) और विक्रमादित्य प्रथम के उत्तराधिकारी विक्रमादित्य द्वितीय ने कांचीपुरम पर कब्जा कर लिया लेकिन शहर को छोड़ दिया। विक्रमादित्य द्वितीय के उत्तराधिकारी कीर्तिवर्मन द्वितीय को राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक दंतिदुर्ग ने पराजित किया था।
- **वेंगी के चालुक्य (पूर्वी चालुक्य):** वेंगी में राजधानी के साथ पूर्वी दक्कन में पुलकेशिन द्वितीय की मृत्यु के बाद पूर्वी चालुक्यों का उदय हुआ। उन्होंने 11वीं शताब्दी तक शासन किया।
- **कल्याणी के चालुक्य (पश्चिमी चालुक्य):**
  - वे कल्याणी (वर्तमान बसवकल्याण) के शासक बादामी चालुक्यों के वंशज थे। 973 ईस्वी में, बीजापुर क्षेत्र के राष्ट्रकूट शासन के एक सामंत तेलप द्वितीय ने मालवा के परमारों को हराया।
  - तैलप द्वितीय ने कल्याणी पर कब्जा कर लिया और उसका राज्य जल्दी ही सोमेश्वर प्रथम के अधीन एक साम्राज्य के रूप में विकसित हो गया। सोमेश्वर प्रथम ने राजधानी को मान्यखेत से कल्याणी में स्थानांतरित कर दिया। एक सदी से भी अधिक समय तक, दक्षिणी भारत के दो साम्राज्यों, पश्चिमी चालुक्यों और तंजावुर के चोल वंश ने वेंगी के उपजाऊ क्षेत्र को नियंत्रित करने के लिए कई रक्तरंजित युद्ध भी किए।
  - 11वीं शताब्दी के अंत में विक्रमादित्य षष्टम के शासन के दौरान, उत्तर में नर्मदा नदी और दक्षिण में कावेरी नदी के बीच के विशाल क्षेत्र चालुक्य नियंत्रण में आ गए।

क्या आप जानते हैं?

- **ऐहोल शिलालेख:** यह ऐहोल (बगलकोट जिला, कर्नाटक) में मेगुती मंदिर में पाया गया है। यह चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा संस्कृत में लिखा गया है। इसमें पुलकेशिन द्वितीय द्वारा हर्षवर्धन को पराजित करने का उल्लेख भी किया गया है।

26. राष्ट्रकूट
()

- राष्ट्रकूटों ने न केवल दक्षिण पर बल्कि सुदूर दक्षिण के कुछ हिस्सों और गंगा के मैदान के साथ–साथ 8 वीं से 10 वीं शताब्दी ईस्वी तक शासन किया। वे कन्नड़ मूल के थे और उनकी मातृभाषा कन्नड़ थी। दन्तिदुर्ग राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक था।
- वह बादामी के चालुक्यों के अधीन एक सामन्त था। कृष्ण प्रथम दन्तिदुर्ग का उत्तराधिकारी बना। उसने राष्ट्रकूट शक्ति को समेकित और विस्तारित किया। वे कला और स्थापत्य के महान संरक्षक थे। एलोरा में कैलासनाथ मंदिर का निर्माण उन्हीं ने करवाया था।
- **राष्ट्रकूट शासक:**
  - राष्ट्रकूट वंश का सबसे महान राजा अमोघवर्ष था। उसने मान्यखेत (अब कर्नाटक में मलखेड) में एक नई राजधानी का निर्माण करवाया था। अमोघवर्ष (814–878 ईस्वी) को एक जैन भिक्षु, जिनसेन द्वारा जैन धर्म में परिवर्तित कराया गया।
  - कृष्ण द्वितीय, जो अपने पिता अमोघवर्ष का उत्तराधिकारी था, को 916 ईस्वी में परांतक के अधीन चोलों के हाथों वल्लल (आधुनिक तिरुवल्लम, वेल्लोर जिला) की लड़ाई में हार का सामना करना पड़ा। कृष्ण तृतीय (939–967 ईस्वी) राष्ट्रकूट वंश का अंतिम योग्य शासक था।
  - उसने तक्कोलम (वर्तमान में वेल्लोर जिले में) की लड़ाई में चोलों को हराया और तंजावुर पर अधिकार कर लिया था। कृष्ण तृतीय के अधीन राष्ट्रकूटों ने कन्नौज पर नियंत्रण के लिए उत्तर भारत के राजवंशों के साथ युद्ध लड़ा।
  - उसने रामेश्वरम में कृष्णेश्वर मंदिर का निर्माण किया। गोविंद तृतीय राष्ट्रकूट साम्राज्य को अक्षुण्ण रखने वाला अंतिम शासक था। उनकी मृत्यु के बाद, राष्ट्रकूट शक्ति का पतन होने लगा।

गुप्त और गुप्तोत्तर युग
(Gupta and After Gupta Period)

- तीसरी शताब्दी के अंत तक, उत्तर में कुषाणों और दक्षिण में सातवाहनों द्वारा स्थापित शक्तिशाली साम्राज्यों ने अपनी महानता और शक्ति खो दी थी। कुषाणों और सातवाहनों के पतन के बाद, चंद्रगुप्त ने एक नवीन राजवंश स्थापित किया और वहां अपना शासन स्थापित किया, जो लगभग दो सौ वर्षों तक चला।
- गुप्तों के पतन और उसके बाद और लगभग 50 वर्षों के अंतराल के पश्चात, वर्धन वंश के हर्ष ने 606 से 647 ईस्वी तक उत्तर भारत पर शासन किया।

27. गुप्त वंश की स्थापना
(??)

- **श्री गुप्त (तीसरी शताब्दी के अंत में):**
  - इसको गुप्त वंश का संस्थापक माना जाता है। माना जाता है कि उसने वर्तमान बंगाल और बिहार के कुछ हिस्सों पर शासन किया था। वह गुप्त वंश का पहला शासक था जिसका अंकन सिक्कों पर किया गया था।
  - उसका पुत्र घटोत्कच ने उसके बाद सिंहासन ग्रहण किया। अभिलेखों में दोनों शासकों का उल्लेख महाराजाओं के रूप में किया गया है।
- **चंद्रगुप्त प्रथम** (319–335 **ईस्वी**)
  - चंद्रगुप्त प्रथम ने प्रसिद्ध और शक्तिशाली लिच्छवी परिवार की कुमारदेवी से विवाह किया था।
  - इस परिवार के समर्थन के बाद, चंद्रगुप्त ने उत्तरी भारत के विभिन्न छोटे राज्यों को समाप्त कर स्वयं एक बड़े राज्य शासक बन गया। चंद्रगुप्त के काल से सम्बंधित सोने के सिक्कों पर चंद्रगुप्त, कुमारदेवी की छवियाँ तथा शलिच्छवायःश अंकित हैं।

क्या आप जानते हैं?
- ★ लिच्छवी एक पुराना गण–संघ था और इसका क्षेत्र गंगा और नेपाल तराई के बीच स्थित था।

- **समुद्रगुप्त** (335-380 **ईस्वी**):
  - चन्द्रगुप्त प्रथम का पुत्र समुद्रगुप्त इस वंश का सबसे महान शासक था। समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण ने इलाहाबाद स्तंभ पर प्रयाग प्रशस्ति को उत्कीर्ण किया था। यह इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख ही समुद्रगुप्त के शासनकाल की जानकारी का मुख्य स्रोत है।
  - इस प्रशस्ति में कवि ने राजा की महिमा के शब्दों में प्रशंसा की – एक योद्धा के रूप में, एक राजा के रूप में जिसने युद्ध में विजय प्राप्त की, जो विद्वान और सर्वश्रेष्ठ कवि थे। उन्हें देवताओं के समान भी वर्णित किया गया है। प्रशस्ति की रचना बहुत लंबे वाक्यों में की गई थी।
  - हरिषेण चार विभिन्न प्रकार के शासकों का वर्णन करता है और हमें उनके प्रति समुद्रगुप्त की नीतियों के बारे में बताता है।
  - आर्यावर्त के शासकरू नौ शासकों को उखाड़ फेंका गया था, और उनके राज्यों को समुद्रगुप्त के साम्राज्य का हिस्सा बना दिया गया था।
  - दक्षिणापथ के शासकरू बारह शासक थे। उन्होंने पराजित होने के बाद समुद्रगुप्त के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और फिर उन्होंने उन्हें फिर से अपने अधीन शासन करने की अनुमति दी।
  - असम, तटीय बंगाल, नेपाल और उत्तर पश्चिम में कई गण संघों सहित पड़ोसी राज्यों का आंतरिक चक्र। उन्होने उपहार दिये, उसके आदेशों का पालन किया, और उसके दरबार में उपस्थित हुए।
  - बाहरी क्षेत्रों के शासक, शायद कुषाणों और शकों के वंशज, और श्रीलंका के शासक, जिन्होंने उसकी अधीनता की और अपनी पुत्रियों का विवाह गुप्त राजकुमारों के साथ करने की पेशकश की थी।

28. गुप्त वंश का सुदृढ़ीकरण
(??)

- समुद्रगुप्त एक महान सेनापति था और जब वह सम्राट बना, तो उसने पूरे देश में और यहाँ तक कि दक्षिण में भी एक प्रबल अभियान चलाया और उसने दक्षिणी पल्लव साम्राज्य के शासक विष्णुगोप को परास्त किया था।
- समुद्रगुप्त ने उत्तरी भारत में नौ राज्यों पर विजय प्राप्त की। उसने दक्षिणी भारत के 12 शासकों को सामंतों का दर्जा दिया और उन्हें भेंट देने के लिए मजबूर किया। पूर्वी बंगाल, असम, नेपाल, पंजाब के पूर्वी हिस्से और राजस्थान की विभिन्न जनजातियों के शासक भी उसको भेंटें देते थे।
- **चंद्रगुप्त द्वितीय** (380-415 **ईस्वी**):
  - चन्द्रगुप्त द्वितीय, समुद्रगुप्त का पुत्र था। उसे विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है। उसने शक शासकों को हराकर पश्चिमी मालवा और गुजरात पर विजय प्राप्त की। उसने दक्षिणी भारत के शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए थे। माना जाता है कि कुतुब मीनार के पास लौह स्तंभ का निर्माण विक्रमादित्य ने ही स्थापित कराया था।
  - चीन के एक बौद्ध विद्वान फाह्यान ने चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया था। कहा जाता है कि विक्रमादित्य ने अपने दरबार में महानतम लेखकों और कलाकारों अर्थात नवरत्न (नौ रत्न) को संरक्षण दिया हुआ था। कालिदास उन्हीं नौ रत्नों में से एक माने जाते हैं।

विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न

कालिदास	संस्कृत कवि
हरिषेण	संस्कृत कवि
अमरसिंह	कोषकार
धनवंतरी	चिकित्सक
क्षपणक	ज्योतिषी
शंकु	वास्तुकार
वराहमिहिर	खगोलविद
वररुचि	व्याकरण और संस्कृत विद्वान
वेताल भट्ट	जादूगर

क्या आप जानते हैं?
- ★ विक्रमादित्य, नरेंद्रचंद्र, सिंहचंद्र, विक्रम देवराज, देवगुप्त और देवश्री चंद्रगुप्त द्वितीय के उपनाम हैं।
- ★ चंद्रगुप्त प्रथम, रोमन सम्राट कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट का समकालीन था। ज्ञात हो कि कॉन्स्टेंटाइन द ग्रेट ने की कुस्तुन्तुनिया (कॉन्स्टेंटिनोपल) साम्राज्य की स्थापना की थी।
- ★ **फाह्यानः** चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान, बौद्ध भिक्षु फाह्यान ने भारत का दौरा किया था। उसके यात्रा वृत्तांतों से हमें गुप्त युग के लोगों की सामाजिक–आर्थिक, धार्मिक और नैतिक स्थितियों की जानकारी प्राप्त होती है। फाह्यान के अनुसार, मगध के लोग सुखी और समृद्ध थे, न्याय का स्तर मध्यम था और मृत्युदंड प्रायः (कुछ अपराध को छोड़कर) नहीं दिया जाता था। चन्द्रगुप्त की राजधानी पाटलिपुत्र में लोग अमीर और समृद्ध थे।

- चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद उनका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम शासक बना और उसने ही प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण कराया था। कुमारगुप्त के उत्तराधिकारी स्कंदगुप्त के शासनकाल में हूणों ने आक्रमण किया था और उसने हूणों को पराजित कर खदेड़ दिया था। लेकिन बारह साल बाद हूण फिर भारत आए और उन्होंने गुप्त साम्राज्य को समाप्त कर दिया। महान गुप्त शासकों में से अंतिम शासक बालादित्य थे, जिन्हें नरसिंह गुप्त प्रथम माना जाता था।
- वह बौद्ध धर्म को मानता था और मिहिरकुल के प्रति निष्ठा रखता था लेकिन बौद्ध धर्म के प्रति मिहिरकुल की शत्रुता से व्यथित था। इसलिए उन्होंने उसको भेंट देना बंद कर दिया। यद्यपि बालादित्य ने मिहिरकुल को नियंत्रित किया हुआ था, लेकिन मिहिरकुल विश्वासघाती हो गया और उसने बालादित्य को मगध से खदेड़ दिया। बालादित्य के बाद महान गुप्त साम्राज्य का अंत हो गया। ज्ञात हो कि गुप्त साम्राज्य के अंतिम ज्ञात शासक विष्णुगुप्त था।

क्या आप जानते हैं?

- ★ **नालंदा विश्वविद्यालय:** नालंदा विश्वविद्यालय 5वीं और 6वीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के संरक्षण में और बाद में कन्नौज के सम्राट हर्ष के अधीन विकसित हुआ था। इस विश्वविद्यालय में अध्ययन का मुख्य विषय बौद्ध धर्म था।
- ★ इस विश्वविद्यालय में योग, वैदिक साहित्य और चिकित्सा जैसे अन्य विषयों को भी पढ़ाया जाता था। ह्वेनसांग ने इस विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म का अध्ययन करते हुए कई वर्ष बिताए। इस विश्वविद्यालय के परिसर में आठ महा पाठशाला और तीन बड़े पुस्तकालय स्थित थे। नालंदा विश्वविद्यालय को बख्तियार खिलजी के नेतृत्व में मामलुकों (तुर्की मुसलमानों) द्वारा नष्ट कर दिया गया था। आज, यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।
- ★ **हूण:** ये खानाबदोश कबीले थे, जिन्होंने अपने महान शासक अत्तिकिन के नेतृत्व में रोम और कुस्तुन्तुनिया को आतंकित किया था। श्वेत हूण जो इन कबीलों से जुड़े थे, मध्य एशिया के रास्ते भारत आए थे।

29. वर्धन वंश
()

- वर्धन या पुष्यभूति वंश के संस्थापक ने थानेश्वर से शासन प्रारम्भ किया। पुष्यभूति ने गुप्तों के अधीन एक सामंत के रूप में कार्य किया था और गुप्तों के पतन के बाद वे स्वतंत्र शासक बन गए।
- प्रभाकर वर्धन के राज्याभिषेक के साथ, पुष्यभूति वंश मजबूत और शक्तिशाली हो गया। प्रभाकरवर्धन के ज्येष्ठ पुत्र राज्यवर्धन अपने पिता की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा।
- राज्यवर्धन की बहन राज्यश्री के पति, कन्नौज के मौखरी राजा थे जो बंगाल के गौड़ शासक शशांक द्वारा मारे गए थे। शशांक ने राज्यश्री को भी बंदी बना लिया। राज्यवर्धन, अपनी बहन को मुक्त कराने की प्रक्रिया में, शशांक द्वारा विश्वासघात कर मार डाला गया था।
- इसके परिणामस्वरूप उसका छोटा भाई हर्षवर्धन थानेश्वर का राजा बना और कन्नौज साम्राज्य के प्रतिष्ठित लोगों ने हर्ष को राजा बनने के लिए प्रोत्साहित किया। थानेश्वर और कन्नौज दोनों का शासक बनने के बाद हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानांतरित कर दी थी।
- **हर्षवर्धन की विजय:** हर्षवर्धन वर्धन वंश का सबसे लोकप्रिय राजा था। उसने 41 वर्षों तक शासन किया। जालंधर, कश्मीर, नेपाल और वल्लभी सभी उसके क्षेत्र में शामिल थे।
- वह हर्ष ही था जिसने अधिकांश उत्तरी भारत को एकीकृत किया। लेकिन दक्षिण में उसके आधिपत्य विस्तार को चालुक्य राजा पुलिकेशिन द्वितीय ने रोक दिया था। 648 ईस्वी में उनकी मृत्यु के बाद हर्ष का राज्य तेजी से छोटे–छोटे राज्यों में बिखर गया। उसने ईरान और चीन के शासकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध भी स्थापित किए थे।

क्या आप जानते हैं?

- ★ ह्वेनसांग, जिसे 'तीर्थयात्रियों के राजकुमार' कहा जाता है, हर्ष के शासनकाल के दौरान भारत आया था। उसका सियू–की नामक ग्रन्थ हर्ष के समय में भारत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थितियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। ह्वेनसांग हमें बताता है कि हर्ष, हालांकि एक बौद्ध था, परन्तु वह प्रयाग में आयोजित महान कुंभ मेले में भाग लेने जाया करता था।
- ★ हर्ष के द्वारा आयोजित कन्नौज की सभा में 20 राजाओं ने भाग लिया था। इस सभा में बड़ी संख्या में बौद्ध, जैन और वैदिक विद्वान शामिल हुए थे। एक मठ में बुद्ध की एक स्वर्ण प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी और एक जुलूस में बुद्ध की एक छोटी मूर्ति (तीन फीट) को ले जाया गया था।
- ★ प्रयाग की सभा में हर्ष ने अपने धन को बौद्धों, वैदिक विद्वानों और गरीब लोगों में बाँट दिया था। सभा के चारों दिनों में हर्ष ने बौद्ध भिक्षुओं को शानदार उपहार भी दिए थे।
- ★ हर्ष और चीन के तांग राजवंश दोनों समकालीन थे। उनकी राजधानी (शीआन) कला और शिक्षा का एक बड़ा केंद्र थी।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. हड़प्पा स्थल लोथल.....में स्थित है।
(A) महाराष्ट्र (B) राजस्थान
(C) लाहौर (D) गुजरात

2. भारतीय का नाम जो मोहनजोदड़ो की खोज के साथ जुड़ा था–
(A) आर. डी. बनर्जी
(B) आर. डी. चटर्जी
(C) डब्ल्यू. सी. बनर्जी
(D) एस. एन. बनर्जी

3. सिन्धु घाटी सभ्यता का बंदरगाह शहर कौन–सा है ?
(A) हड़प्पा (B) आलमगीरपुर
(C) बनवाली (D) लोथाल

4. निम्नलिखित में से कौन गौतम बुद्ध के समकालीन थे?
(A) नागार्जुन
(B) कनिष्क
(C) कौटिल्य
(D) महावीर

5. तीसरी बौद्ध परिषद् की तारीख क्या थी?
(A) 227 ईसापूर्व (B) 383 ईसापूर्व
(C) 250 ईसापूर्व (D) 235 ईसापूर्व

6. दुनिया के इतिहास में एकमात्र राजा कौन है जिसने युद्ध जीतने के बाद युद्ध को त्याग दिया?
(A) औरंगजेब (B) चंद्रगुप्त
(C) टीपू सुल्तान (D) अशोक

7. मेगस्थनीज एक राजदूत था जिसे पश्चिम एशिया के यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर ने किस भारतीय शासक के दरबार में भेजा था ?
(A) राजाराजा चोल (B) अशोक
(C) चन्द्रगुप्त (D) बिन्दुसार

8. मगध साम्राज्य.....के किनारे स्थापित हुआ।
(A) यमुना नदी (B) सोन नदी
(C) गोमती नदी (D) सरयू नदी

9. निम्नलिखित में से कौन–से अशोक के धर्म के सिद्धांत नहीं है?
(A) बौद्ध धर्म का प्रचार
(B) पूजा
(C) त्याग
(D) उपर्युक्त सभी

10. पल्लवों के शासनकाल के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सही है ?
I. उर एक ग्राम्या सभा जो, उन क्षेत्रों में पाई जाती थी जहाँ भूमि के मालिक ब्राह्मण नहीं थे।
II. नागरा व्यापारियों का एक संगठन था।
(A) I और II दोनों
(B) केवल I
(C) केवल II
(D) न तो I न ही II

11. पल्लवों के राज्य की राजधानी.....थी।
(A) मैसूर (B) मद्रास
(C) कन्नौज (D) कांचीपुरम

12. चालुक्य शासक पुल्केशिन द्वितीय के दरबारी कवि कौन थे ?
(A) कालिदास (B) बाणभट्ट
(C) श्यामकीर्ति (D) रविकीर्ति

13. राजा–रानी द्वारा शासित देशों को उनकी राजधानी के साथ सुमेलित करें–

सूची–A (राज्य)	**सूची–B (राजधानी)**
(i) पल्लव	(a) बादामी
(ii) चालुक्य	(b) मदुराई
(iii) पांड्य	(c) कांची
(iv) कदम्ब	(d) वैजयन्ती

कूट :

	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(A)	(a)	(c)	(b)	(d)
(B)	(b)	(c)	(d)	(a)
(C)	(c)	(a)	(b)	(d)
(D)	(c)	(a)	(d)	(b)

14. निम्नलिखित में से किस वंश के शासकों को 'दक्षिणपथ' के स्वामी के रूप में जाना जाता था?
(A) पंड्या (B) सातवाहन
(C) चेरेस (D) चोल

15. यदि आपको प्राचीन भारतीय इतिहास पढ़ाना प्रारम्भ करना है तो निम्नलिखित स्रोतों में से किस स्रोत को प्रयुक्त करना गलत होगा ?
(A) लघु चित्रकारी (B) शिलालेख
(C) हस्तलिपियाँ (D) गुफा चित्रकारी

16. सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ ..... पर लिखी गई थीं।
(A) कागज (B) लकड़ी
(C) ताड़पत्रों (D) पत्थरों

17. ऐतिहासिक स्थल वह है जहाँ–
(A) अतीत के स्मृति शेष/अवशेष मिलते हैं
(B) उत्खनन के क्रियाकलाप होते हैं
(C) इतिहास-प्रिय लोग जुटते हैं
(D) इतिहासकार इतिहास लिखते हैं

18. बी.सी.ई. का तात्पर्य है–
(A) बिफोर कॉमन एरा
(B) बिफोर सीजर एरा
(C) बिफोर कॉन्टिंपररी एरा
(D) बिफोर क्रिश्चियन एरा

19. हड़प्पा सभ्यता के नगरों (शहरों) के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा(से) कथन सत्य है ?
(i) लोथल में अग्निकुण्ड मिले हैं यहाँ यज्ञ किए जाते होंगे।
(ii) कालीबंगा में जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले हैं।
(A) केवल (i) सत्य है।
(B) केवल (ii) सत्य है।
(C) (i) व (ii) दोनों सत्य हैं
(D) (i) व (ii) दोनों असत्य हैं

20. ऋग्वैदिक काल के विषय में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सत्य हैं ?
a. कोई स्थायी सेना नहीं होती थी।
b. कुछ प्रार्थनाओं की रचना महिलाओं ने की थी।
c. दास और दस्यु भी यज्ञ करते थे।
d. राजाओं के पास राजधानी, नगर या महल नहीं थे।
सही विकल्प का चयन कीजिए-
(A) केवल a और b
(B) केवल a, b और d
(C) केवल b, c और d
(D) केवल b और d

21. 'पुरु', 'यदु' और 'भरत' का वेदों में उल्लेख ..... की तरह है।
(A) जन (B) राष्ट्र
(C) राजन (D) दस्यु

22. सही अर्थों वाले शब्दों का मिलान करें-

a. स्तूप	i. टॉवर
b. मंडप	ii. टीला
c. शिखर	iii. हॉल

(A) a-ii, b-iii, c-i
(B) a-ii, b-i, c-iii
(C) a-iii, b-ii, c-i
(D) a-i, b-iii, c-ii

23. महायान, बौद्ध धर्म की आरंभिक मान्यताओं से निम्न में से किन कारणों से भिन्न था ?
(1) इसमें बुद्ध की उपस्थिति संकेतों द्वारा दर्शाई गई
(2) इसमें बोधिसत्व एकांतवास में रहते थे।
(3) इसमें बुद्ध की प्रतिमाएँ बनाई गई थीं
(4) बोधिसत्व अन्य लोगों को शिक्षा देने के लिए सांसारिक परिवेश में रम गए।
एक सही विकल्प का चयन कीजिए :
(A) 1 और 2 सही हैं
(B) 2 और 3 सही हैं
(C) 3 और 4 सही हैं
(D) 1 और 4 सही हैं

24. निम्नलिखित में से कौन-सा बौद्ध-धर्म के त्रिरत्नों में नहीं है ?
(A) अहिंसा (B) संघ
(C) बुद्ध (D) धम्म

25. अशोक के शिलालेख देश के भीतर और बाहर कई जगहों पर मिले हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही जगहों को दर्शाता है ?
(A) कालीबंगा, चन्हूदड़ो, धौलावीरा, सोत्काकोह
(B) जौगड़, मस्की, टोपरा, लम्पक
(C) गंवेरीवाला, इनामगाँव, दाओजली हेडिंग
(D) हुँस्गी, भीमबेटका, कुरनूल, पैय्यमपल्ली

26. निम्नलिखित में से मौर्य साम्राज्य में उत्तराधिकार का कौन-सा क्रम सही है ?

(A) चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, बिंदुसार, दशरथ मौर्य

(B) चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक, दशरथ मौर्य

(C) चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, दशरथ मौर्य, अशोक

(D) चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, दशरथ मौर्य, अशोक

27. एक तमिल शब्द जो तीन राजवंशों, चोला, चेरा और पाण्ड्या के प्रमुखों के लिए प्रयोग होता था, वह है -

(A) दक्षिण पथ (B) महामंडलेश्वर

(C) राजाराजदेवा (D) मुवेन्दार

28. निम्नलिखित का सुमेल करें :

किताबें	**लेखक**
a. मेघदूत	i. बाणभट्ट
b. हर्षचरित	ii. आर्यभट्ट
c. आर्यभट्टीयम	iii. सुश्रुत
d. सुश्रुतसंहिता	iv. कालिदास

(A) a-iv, b-i, c-ii, d-iii

(B) a-i, b-iv, c-iii, d-ii

(C) a-ii, b-i, c-iv, d-iii

(D) a-iii, b-iv, c-i, d-ii

उत्तरमाला

1. (D)	**2.** (A)	**3.** (D)	**4.** (D)	**5.** (C)
6. (D)	**7.** (C)	**8.** (B)	**9.** (B)	**10.** (A)
11. (D)	**12.** (D)	**13.** (C)	**14.** (B)	**15.** (A)
16. (C)	**17.** (A)	**18.** (A)	**19.** (C)	**20.** (B)
21. (A)	**22.** (A)	**23.** (C)	**24.** (A)	**25.** (B)
26. (B)	**27.** (D)	**28.** (A)		

❑❑

अध्याय
1

संख्या पद्धति (Number System)

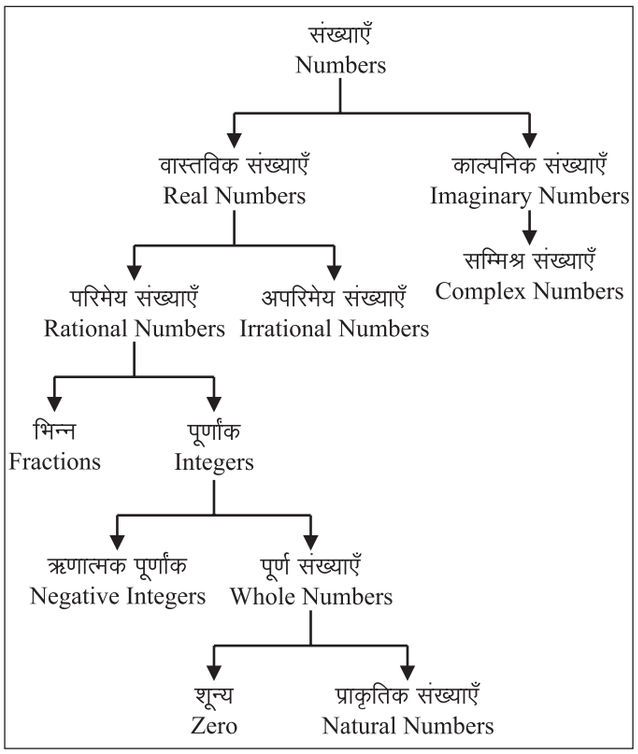

पूर्णांकों पर संक्रियाओं के गुण

- **संवरक गुण–** किन्हीं दो पूर्णांकों का जोड़, घटाव तथा गुणा हमेशा एक पूर्णांक होता है।

  उदाहरण– $4 + 5 = 9$, जो एक पूर्णांक है

  $4 \times 5 = 20$, जो एक पूर्णांक है

  $4 - 5 = -1$, जो एक पूर्णांक है

  पूर्णांकों का संवरक गुण पूर्णांकों के विभाजन के लिए सत्य नहीं है, क्योंकि दो पूर्णांकों के परिणाम सदैव पूर्णांक नहीं हो सकता है।

  उदाहरण– $4 \div 5 = 0.8$, जो एक पूर्णांक नहीं है

- **क्रमविनिमेय गुण–** योग तथा गुणन की संक्रिया में दो पूर्णांकों का क्रम बदलने पर परिणाम सदैव समान ही रहता है।

  उदाहरण– $4 + 5 = 5 + 4 = 9$

  $4 \times 5 = 5 \times 4 = 20$

  यह गुण घटाव तथा भाग के लिए मान्य नहीं है।

- **साहचर्य गुण–** योग तथा गुणन की संक्रिया में दो से अधिक पूर्णांकों को कोष्ठक के साथ किसी भी प्रकार समूहित किया जा सकता है, परिणाम सदैव समान रहेगा।

  उदाहरण– $4 + (5 + 6) = (4 + 5) + 6 = 15$

  $4 \times (5 \times 6) = (4 \times 5) \times 6 = 120$

  यह गुण घटाव तथा भाग के लिए मान्य नहीं है।

- **वितरण गुण–** गणना को आसान बनाने के लिए गुणन संक्रिया को जोड़ तथा घटाव पर वितरित किया जा सकता है।

  उदाहरण– $6 \times (5 + 4) = 6 \times 5 + 6 \times 4$

  $6 \times (5 - 4) = 6 \times 5 - 6 \times 4$

- **तत्समक गुण–** 'शून्य' (0) को पूर्णांकों का योज्य तत्समक कहा जाता है तथा '1' को पूर्णांकों का गुणनात्मक तत्समक कहा जाता है।

संख्याओं पर भाग संक्रिया

- भाज्य = भाजक × भागफल + शेषफल

  जहाँ, 0 ≤ शेषफल < भाजक

  उदा. : 808 को किसी संख्या से भाग देने पर भागफल 15 तथा शेषफल 13 प्राप्त होता है। भाजक ज्ञात कीजिए।

  हल : भाजक $= \frac{\text{भाज्य} - \text{शेषफल}}{\text{भागफल}} = \frac{808 - 13}{15} = \frac{795}{15} = 53$

- $(a^n + b^n)$, $(a + b)$ से विभाजित होगा, यदि n विषम हो।
- $(a^n - b^n)$, $(a - b)$ से विभाजित होगा, यदि n प्राकृतिक संख्या हो।
- $(a^n - b^n)$, $(a + b)$ से विभाजित होगी, यदि n सम हो।
- $(a^n + b^n + c^n)$, $(a + b + c)$ से विभाजित होगा, यदि n विषम हो।
- एक संख्या को जब D_1 और D_2 से क्रमागत विभाजित किया जाता है, तो शेषफल क्रमशः R_1 और R_2 प्राप्त होता है। यदि उसी संख्या को $D_1 \times D_2$ से विभाजित किया जाता है, शेषफल $= D_1 \times R_2 + R_1$

  उदा. : एक निश्चित संख्या को जब क्रमिक रूप से 3 और 5 से विभाजित किया जाता है, तो क्रमशः 1 और 2 शेषफल बचता है। यदि उसी संख्या को 15 से विभाजित किया जाए तो शेषफल क्या होगा?

  हल : यहाँ $D_1 = 3$, $D_2 = 5$, $R_1 = 1$ और $R_2 = 2$

  अभीष्ट शेषफल $= D_1 \times R_2 + R_1$

  $= 3 \times 2 + 1$

  $= 7$

- दो भिन्न–भिन्न संख्याओं को जब एक ही भाजक से विभाजित किया जाता है, तो शेषफल क्रमशः A और B बचता है तथा जब उन संख्याओं के योग को उसी भाजक से विभाजित किया जाता है, तो शेषफल C बचता है। तब भाजक = A + B – C

  उदा. : यदि दो संख्याओं में से प्रत्येक को एक ही भाजक से विभाजित किया जाये, तो शेषफल क्रमशः 3 और 4 बचता है। यदि संख्याओं के योग को उसी भाजक से विभाजित किया जाये, तो शेषफल 2 बचता है। भाजक ज्ञात कीजिए।

हल : अभीष्ट भाजक $= A + B - C$
$= 3 + 4 - 2$
$= 5$

- किसी दी हुई संख्या में से एक न्यूनतम संख्या इस प्रकार घटायी जाती है कि वह संख्या किसी भाजक से विभाजित हो जाती है, तो

  अभीष्ट न्यूनतम संख्या = शेषफल

  उदा. : 42072 में कौन–सी न्यूनतम संख्या घटायी जाए कि प्राप्त संख्या 93 से पूर्णतः विभाजित हो जाए।

  हल : 42072 को 93 से भाग देने पर प्राप्त शेषफल = 36

  अभीष्ट न्यूनतम संख्या = 36

- किसी दी हुई संख्या में एक न्यूनतम संख्या इस प्रकार जोड़ी जाती है कि वह संख्या किसी भाजक से विभाजित हो जाती है, तो

  अभीष्ट न्यूनतम संख्या = दी गई संख्या – शेषफल

  उदा. : 42072 में कौन–सी न्यूनतम संख्या जोड़ी जाए कि प्राप्त संख्या 93 से पूर्णतः विभाजित हो जाए।

  हल : 42072 को 93 से भाग देने पर प्राप्त शेषफल = 36

  अभीष्ट न्यूनतम संख्या = भाजक – शेषफल
  $= 93 - 36$
  $= 57$

विभाजकता के नियम

- **2 से विभाजकता**—यदि किसी संख्या का इकाई अंक 0, 2, 4, 6, 8 में से हो, तो वह संख्या 2 से विभाज्य होती है।
- **3 से विभाजकता**—यदि किसी संख्या के सभी अंकों का योग, 3 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 3 से विभाजित होती है।
- **4 से विभाजकता**—यदि किसी संख्या के अन्तिम दो अंकों का युग्म, 4 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 4 से विभाजित होती है।
- **5 से विभाजकता**—यदि किसी संख्या का इकाई अंक 0 अथवा 5 है, तो वह संख्या 5 से पूर्णतया विभाजित होती है।
- **6 से विभाजकता**—यदि संख्या 2 तथा 3 से पूर्णतया विभाज्य है, तो वह संख्या 6 से भी पूर्णतया विभाजित होती है।
- **7 से विभाजकता**—संख्या का इकाई अंक लेकर उसका दोगुना करें। प्राप्त संख्या को मूल संख्या के शेष अंकों में से घटाएँ। यदि प्राप्त नयी संख्या शून्य (0) अथवा 7 से विभाजित होने वाली संख्या है, तो मूल संख्या भी 7 से विभाजित होगी।
- **8 से विभाजकता**—संख्या के अन्तिम तीन अंकों का युग्म, यदि 8 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 8 से विभाजित होगी।
- **9 से विभाजकता**—यदि संख्या के सभी अंकों का योग, 9 से विभाजित है, तो वह संख्या भी 9 से विभाजित होगी।
- **11 से विभाजकता**—यदि संख्या में सम स्थानों पर अंकों के योग तथा विषम स्थानों पर अंकों के योग का अन्तर, शून्य या 11 से विभाज्य है, तो संख्या भी 11 से विभाज्य होगी।

इकाई अंक पर आधारित समस्याएँ

- 0, 1, 5 और 6 के इकाई अंक वाली संख्याओं की किसी भी घात का इकाई अंक क्रमशः 0, 1, 5 और 6 होगा। अर्थात्

  $(.....0)^n = ...0$; $(.....1)^n = ...1$
  $(.....5)^n = ...5$; $(.....6)^n = ...6$

- यदि किसी संख्या का इकाई अंक 0, 1, 5 और 6 के अलावा अन्य हो, तो इसके इकाई अंक को अपने आप से कम से कम बार, जब तक कि इसका इकाई अंक 1 या 6 न प्राप्त हो जाये, गुणा किया जाता है। अर्थात्

  $(2)^4 = 16$; $(3)^4 = 81$; $(4)^2 = 16$;
  $(7)^4 = 2401$; $(8)^4 = 4096$; $(9)^2 = 81$

- यदि n एक प्राकृतिक संख्या हो, तो

  $(2)^{4n}$ का इकाई अंक = 6; $(3)^{4n}$ का इकाई अंक = 1
  $(4)^{2n}$ का इकाई अंक = 6; $(7)^{4n}$ का इकाई अंक = 1
  $(8)^{4n}$ का इकाई अंक = 6; $(9)^{2n}$ का इकाई अंक = 1

- संख्याओं के गुणनफल में इकाई का अंक ज्ञात करने के लिए सभी संख्याओं के इकाई अंकों का गुणनफल ज्ञात करते हैं। प्राप्त गुणनफल का इकाई अंक, दी गई संख्याओं के गुणनफल में प्राप्त इकाई के अंक के बराबर होता है।

  माना, संख्या A, B, C, ... के इकाई अंक क्रमशः a, b, c, ... हैं, तो

  $A \times B \times C \times .....$ का इकाई अंक = $a \times b \times c \times .....$ का इकाई अंक

महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. प्रत्येक परिमेय संख्या होती है एक–
(A) प्राकृत संख्या (B) पूर्णांक
(C) पूर्ण संख्या (D) वास्तविक संख्या

2. 19 हजार + 19 सैकड़े + 19 इकाइयाँ, बराबर होता है–
(A) 191919 (B) 19919
(C) 21090 (D) 20919

3. तीन अंकों की सबसे बड़ी अभाज्य संख्या है–
(A) 999 (B) 997
(C) 991 (D) 983

4. प्रत्येक प्राकृतिक संख्या n के लिए $n(n + 5)$ हमेशा है–
(A) एक सम संख्या (B) एक विषम संख्या
(C) 3 का एक गुणज (D) 5 का एक संख्या

5. प्रत्येक परिमेय संख्या होती है एक–
(A) प्राकृत संख्या (B) पूर्णांक
(C) पूर्ण संख्या (D) वास्तविक संख्या

6. $1714 \times 1715 \times 1717$ को 12 से विभाजित करने पर शेषफल क्या है?
(A) 3 (B) 8
(C) 2 (D) 9

7. यदि a और b दोनों पूर्ण संख्याएँ हैं, तो $a * b = a^2 - b$ यदि a, b दोनों पूर्ण संख्याएँ नहीं हैं, तो $a * b = ab + a$,

तो $5*\left[3*\left(\frac{1}{2}*\frac{1}{3}\right)\right]$ का मान क्या होगा ?

(A) 15 (B) 20
(C) 25 (D) 30

8. पहली विषम अभाज्य संख्या क्या है ?
(A) 1 (B) 7
(C) 3 (D) 5

9. चार सतत् विषम संख्याओं का योगफल 72 है। दूसरी सबसे बड़ी संख्या ज्ञात कीजिए।
(A) 17 (B) 27
(C) 21 (D) 19

10. वह छोटी से छोटी कौन–सी संख्या है जिसे 5377 के साथ योग करने पर, वह योग 7 से पूर्ण विभाज्य है ?
(A) 9 (B) 7
(C) 6 (D) 5

11. निम्न में से कौन-सा शून्य को नहीं दर्शाता है ?

(A) $\frac{2}{0}$ (B) 1×0

(C) 0×0 (D) $\frac{10-10}{2}$

12. सेब की कीमत ₹ 6 प्रति नग और आम की कीमत ₹ 5 प्रति नग है। X इन फलों पर ₹ 42 खर्च करता है। खरीदे गए सेब की संख्या है –

(A) 3 (B) 4

(C) 5 (D) 2

13. जब 1421×1423×1425 को 12 से विभाजित करते है, तो शेषफल क्या है ?

(A) 2 (B) 3

(C) 4 (D) 1

14. * के किस छोटे से छोटे मान के लिए संख्या 648*458; 11 से विभाजित होगी ?

(A) 6 (B) 7

(C) 9 (D) 5

15. यदि आप 1 से 100 तक की संख्याएं लिखें, तो आप उन्हें लिखने में कितनी बार 2 लिखेंगे ?

(A) 18 (B) 20

(C) 21 (D) 11

16. 55 तथा 555 के मध्य दोनों छोर के मानों को शामिल करते हुए कितनी संख्याएँ हैं, जो 5 से भाज्य हैं ?

(A) 100 (B) 101

(C) 111 (D) 110

व्याख्यात्मक हल

1. (D) प्रत्येक परिमेय संख्या एक वास्तविक संख्या होती है। अतः विकल्प (D) सही है।

2. (D) 19 हजार + 19 सैकड़े + 19 इकाइयाँ

$= 19 \times 1000 + 19 \times 100 + 19 \times 1$

$= 19000 + 1900 + 19$

$= 20919$

3. (B) तीन अंकों की सबसे बड़ी अभ्याज्य संख्या 997 है।

4. (A) ● $n(n + 5)$ के लिए

$n = 1$ रखने पर $1(1 + 5) = 6$

$n = 2$ रखने पर $2(2 + 5) = 14$

$n = 3$ रखने पर $3(3 + 5) = 24$

$n = 4$ रखने पर $4(4 + 5) = 36$

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि प्रत्येक प्राकृत संख्या n के लिए $n(n + 5)$ एक सम संख्या होगी।

5. (A) प्रत्येक परिमेय संख्या एक प्राकृतिक संख्या होती है।

6. (C) $1714 \times 1715 \times 1717$

$= (142 \times 12 + 10)(142 \times 12 + 11)(143 \times 12 + 1)$

∴ अभीष्ट शेषफल

= (शेष $10 \times$ शेष $11 \times$ शेष 1) ÷ 12 का शेषफल

= (110 ÷ 12) का शेषफल = 2

7. (B) व्यंजक $= 5*\left[3*\left(\frac{1}{2}*\frac{1}{3}\right)\right]$

$a*b = a^2 - b$ (यदि a तथा b पूर्ण संख्याएँ हैं)

$a*b = ab + a$ (जबकि a तथा b पूर्ण संख्याएँ नहीं हैं)

$\left[\frac{1}{2}*\frac{1}{3}\right]$ पूर्ण संख्याएँ नहीं हैं।

अतः $a * b = (ab + a)$ नियम लागू होगा।

$= 5*\left[3*\left(\frac{1}{2}\times\frac{1}{3}+\frac{1}{2}\right)\right]$

$= 5*\left[3*\left(\frac{1}{6}+\frac{1}{2}\right)\right]$

$= 5*\left[3*\left(\frac{1+3}{6}\right)\right]$

$= 5*\left[3*\frac{2}{3}\right]$

∴ $\left[3*\frac{2}{3}\right]$ में एक पूर्ण संख्या नहीं है।

∴ $a * b = (ab + a)$ का नियम लागू होगा।

$= 5*\left[3\times\frac{2}{3}+3\right]$

$= 5 * 5 = (5^2 - 5) = (25 - 5)$

$= 20$

8. (C) पहली विषम अभाज्य संख्या = 3

9. (D) माना, चार सतत् विषम संख्याएँ क्रमशः x, $(x + 2)$, $(x + 4)$ तथा $(x + 6)$ हैं।

प्रश्नानुसार,

$x + x + 2 + x + 4 + x + 6 = 72$

$\Rightarrow 4x + 12 = 72$

$\Rightarrow 4x = 72 - 12 = 60$

$\Rightarrow x = \frac{60}{4} = 15$

अतः दूसरी सबसे बड़ी संख्या

$= (x + 4) = 19$

10. (C) 7) 5377 (768

-49

47

-42

57

-56

1

स्पष्ट है, 5377 को 7 से विभाजित करने पर शेषफल 1 बचता है।

अतः जोड़ी जाने वाली अभीष्ट संख्या

$= (7 - 1) = 6$

11. (A) $\boxed{\frac{2}{0}=\text{अनन्त}}$ अतः $\frac{2}{0}$ शून्य को नहीं दर्शाता है।

12. (D) माना सेबों की संख्या और आमों की संख्या क्रमशः x और y है,

प्रश्नानुसार,

$6x + 5y = 42$

विकल्प (D) से, x का मान 2 रखने पर,

$6 \times 2 + 5 \times y = 42$

$5xy = 30$

$y = 6$

अतः अभीष्ट सेबों की संख्या 2 है।

13. (B) $\frac{1421\times1423\times1425}{12}$ का शेषफल

$= \frac{5\times7\times9}{12}$ का शेषफल

$= \frac{315}{12}$ का शेषफल

= 3 (शेषफल)

अतः अभीष्ट शेषफल 3 हैं।

14. (A) चूँकि किसी संख्या को 11 से विभाजित होने के लिए संख्या के सम और विषम स्थानों के योग का अन्तर शून्य अथवा 11 से विभाजित होना चाहिए।

$\therefore (6 + 8 + 4 + 8) - (4 + * + 5) = 11$

$26 - 9 - * = 11$

$17 - * = 11$

$\therefore * = 6$

अतः * का न्यूनतम मान 6 है।

15. (B) 1 से 10 तक संख्या 2 आयेगी = 1 बार

11 से 20 तक संख्या 2 आयेगी = 2 बार

21 से 30 तक संख्या 2 आयेगी = 10 बार

31 से 100 तक संख्या 2 आयेगी = 7 बार

अतः अभीष्ट मान $= 1 + 2 + 10 + 7$

$= 20$

16. (B) अभीष्ट श्रेणी :

55, 60, 65, ... 555

यहाँ, $a = 55$

$d = 60 - 55 = 5$

$l = 555$

∴ $a + (n - 1).\ d = 555$

$55 + (n - 1) \times 5 = 555$

$n - 1 = \frac{500}{5} = 100$

$n = 101$

अतः अभीष्ट संख्याएँ = 101

❑❑

अध्याय 1
अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण (English Alphabet Test)

इस अध्याय के अन्तर्गत अंग्रेजी वर्णमाला (A-Z) पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं तथा अभ्यर्थी को अंग्रेजी वर्णमाला के सभी 26 अक्षरों के स्थानिक मान तथा इससे सम्बन्धित तथ्य याद होने चाहिए।

अंग्रेजी वर्णमाला से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु–

- वर्ण दो प्रकार के होते हैं–
  - **स्वर**—AEIOU (अंग्रेजी वर्णमाला में स्वरों की संख्या 5 है।)
  - **व्यंजन**—BCDFGHJKLMNPQRSTVWXYZ (अंग्रेजी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या 21 है।)
- अर्द्धांश

  अर्द्धांश दो प्रकार के होते हैं–
  - **प्रथम अर्द्धांश**—A B C D E F G H I J K L M (प्रथम अर्द्धांश में कुल 13 अक्षर होते हैं। अत: 1 से 13 तक के अक्षर प्रथम अर्द्धांश में होते हैं।)
  - **द्वितीय अर्द्धांश**— N O P Q R S T U V W X Y Z (द्वितीय अर्द्धांश में कुल 13 अक्षर होते हैं। अत: 14 से 26 तक के अक्षर द्वितीय अर्द्धांश में होते हैं।)
- स्थान

  अंग्रेजी वर्णमाला में, प्रत्येक अक्षर का अपना स्थान होता है। यह स्थान दो क्रमों पर निर्भर करता है।
  - **सीधा क्रम**—इसमें A का स्थान पहला तथा Z का स्थान अन्तिम होता है।

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26

  - **विपरीत क्रम**—इसमें Z का स्थान पहला तथा A का स्थान अन्तिम होता है।

Z	Y	X	W	V	U	T	S	R	Q	P	O	N	M	L	K	J	I	H	G	F	E	D	C	B	A
26	25	24	23	22	21	20	19	18	17	16	15	14	13	12	11	10	9	8	7	6	5	4	3	2	1

अंग्रेजी वर्णमाला में प्रत्येक अक्षर एक-दूसरे का विपरीत होता है; **जैसे**—A का विपरीत अक्षर Z, B का Y, C का X, D का W... आदि।

विपरीत अक्षरों का योग हमेशा 27 होता है।

जैसे—E का विपरीत अक्षर ज्ञात करना है और E का वर्णमाला में 5वाँ स्थान है।

विपरीत वर्ण = (27 – 5) = 22 (V)

अक्षरों के स्थान से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- यदि दोनों अक्षरों की स्थिति समान दिशा में हो, तब दोनों अक्षरों के क्रमांकों को घटा देते हैं और अक्षर का स्थान प्रारम्भिक स्थिति के अनुसार ज्ञात कर लेते हैं। जैसे—दाएँ से 12वें अक्षर के दाएँ 7वाँ अक्षर, दाएँ से 5वाँ अक्षर होगा।
- यदि दोनों अक्षरों की स्थिति असमान दिशा में हो, तब दोनों अक्षरों के क्रमांकों को जोड़ देते हैं और अक्षर का स्थान प्रारम्भिक स्थिति के अनुसार ज्ञात कर लेते हैं। जैसे—दाएँ से 9वें अक्षर के बाएँ 7वाँ अक्षर, दाएँ से 16वाँ अक्षर होगा।

प्रश्नों के प्रकार

अंग्रेजी वर्णमाला में इससे सम्बन्धित निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं–

1. अक्षर का स्थान ज्ञात करना

(I) अंग्रेजी वर्णमाला में

उदा. 1. अंग्रेजी वर्णमाला में, बाएँ से 21वें अक्षर के बाएँ 10वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?

(A) J (B) K (C) L (D) M

हल (B) :

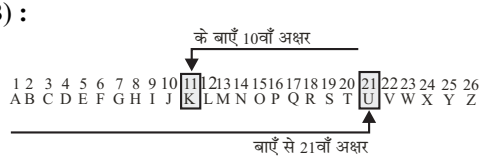

बाएँ से 21वें अक्षर U के बाएँ 10वाँ अक्षर K होगा।

अत: विकल्प (B) सही उत्तर होगा।

2. मध्य अक्षर

(I) मध्य अक्षरों की संख्या ज्ञात करना

अंग्रेजी वर्णमाला में दो अक्षरों के बीच कितने अक्षर हैं। प्रश्न में पूछा जाता है। इनकी चार स्थितियाँ हैं–

(i)

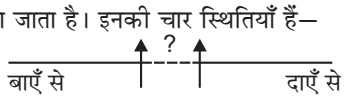

(ii)

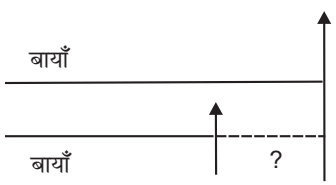

(iii)

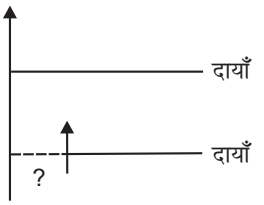

(iv)

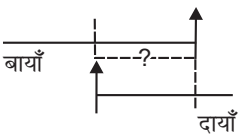

उदा. 1. अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 9वें अक्षर तथा दाएँ से 7वें अक्षर के मध्य कितने अक्षर हैं?

(A) 8 (B) 9 (C) 10 (D) 11

हल (C) :

स्मार्ट ट्रिक—कुल अक्षर → बाएँ से 9 अक्षर + दाएँ से 7 अक्षर

कुल अक्षर → 9 + 7

= 16

अंग्रेजी वर्णमाला में कुल अक्षरों की संख्या

= 26

26 – 16 ⇒ 10

अत: इनके बीच में 10 अक्षर होंगे।

(II) मध्य का अक्षर ज्ञात करना

उदा. 1. अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 8वें तथा 20वें अक्षर के मध्य कौन-सा अक्षर होगा?

(A) M (B) N

(C) P (D) R

हल (B) :

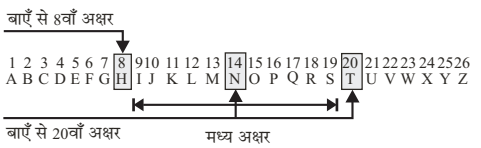

बाएँ से 8वाँ अक्षर H तथा बाएँ से 20वाँ अक्षर T है। इन दोनों के ठीक बीच में अक्षर N होगा।

स्मार्ट ट्रिक—

बाएँ से 14वाँ अक्षर N होगा जोकि दोनों अक्षरों के ठीक बीच का अक्षर होगा।

यदि दोनों अक्षरों का क्रम बाएँ से है, तो दोनों अक्षरों के क्रमांकों को जोड़कर उसका आधा कर देते हैं, जिससे उनके ठीक बीच का अक्षर प्राप्त हो जाता है।

$8 + 20 = \frac{28}{2} = 14 = 14$

बाएँ से 14वाँ अक्षर N होगा जोकि दोनों अक्षरों के ठीक बीच का अक्षर होगा।

3. अक्षर युग्म बनाना

युग्म बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- अक्षर-युग्म आगे तथा पीछे दोनों स्थितियों में सम्भव है।
- एक शब्द में एक से अधिक युग्म बनाये जा सकते हैं।
- एक अक्षर से युग्म बना लेने के बाद दोबारा उसी अक्षर से युग्म बना सकते हैं। यदि वह अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार समान दूरी पर होते हैं।

उदा. 'WONDERS' में ऐसे कितने अक्षर-युग्म हैं, जिनके बीच उतने ही अक्षर हैं, जितने कि अंग्रेजी वर्णमाला में होते हैं?

(A) दो (B) तीन

(C) एक (D) तीन से अधिक

हल (D) :

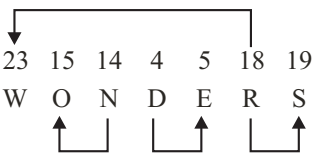

'WONDERS शब्द में NO, DE, RS तथा RW चार ऐसे युग्म हैं, इनके बीच उतने ही अक्षर हैं, जितने अंग्रेजी वर्णमाला में होते हैं।

4. अक्षर समस्या

उदा. 1. यदि शब्द 'REPRESENTATIVE' के पहले और आठवें अक्षरों के स्थान परस्पर बदल दें, इसी प्रकार दूसरे और नौवें अक्षर और आगे भी इसी प्रकार अक्षरों को बदल दिया जाये, तो नई व्यवस्था में बाएँ सिरे से 6वें अक्षर के बाएँ चौथा अक्षर कौन-सा होगा?

(A) E (B) A

(C) P (D) T

हल (D) :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14

R E P R E S E N T A T I V E

परिवर्तन के बाद—

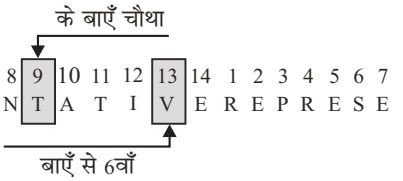

परिवर्तन के बाद शब्द में बाएँ से 6वें अक्षर V के बाएँ चौथा अक्षर T होगा।

5. अंग्रेजी शब्दों का व्यवस्थीकरण

अंग्रेजी के शब्दों को वर्णमाला या शब्दकोश (dictionary) के अनुसार क्रम से व्यवस्थित करना ही शब्दों का व्यवस्थीकरण कहलाता है।

उदा. 1. शब्दकोश के अनुसार कौन-सा शब्द चौथे स्थान पर आयेगा?

(A) Propense (B) Prophet

(C) Prong (D) Propine

हल (D) : Pro p ense
Pro p het
Pro n g
Pro p ine

'Pro' सभी शब्दों में समान है। 'Pro' के बाद सभी में अक्षर अलग हैं। इन अक्षरों को अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार क्रम में लगाने पर 'n' अक्षर पहले आयेगा। उसके बाद p आयेगा, लेकिन p तीन शब्दों में समान है। अक्षरों को वर्णमाला के अनुसार लगाने पर,

1 2 3 4
Pro n g,>Pro pe nse,>Pro ph et,>Pro pi ne

शब्दकोश के अनुसार चौथे स्थान पर Propine आयेगा।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. यदि अंग्रेजी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को A = 1, B = 3 आदि से शुरू होने वाला एक विषम संख्यात्मक मान दिया जाता है, तो शब्द RADICAL के अक्षरों का कुल मान क्या होगा ?
(A) 88 (B) 89
(C) 90 (D) 99

2. यदि अंग्रेजी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को A = 1, B = 3 आदि से शुरू होने वाला एक विषम संख्यात्मक मान दिया जाता है, तो NOMINAL शब्द के अक्षरों का कुल मान क्या होगा ?
(A) 150 (B) 144
(C) 149 (D) 146

3. यदि प्रत्येक अंग्रेजी वर्णमाला को सम संख्यात्मक मान जैसे A = 2, B = 4 मान दिए जाएँ, तो EARTH का कोड क्या होगा ?
(A) 102384218
(B) 122384216
(C) 102364016
(D) 102364018

4. निम्नलिखित शब्दों को उस क्रम में व्यवस्थित करें जैसा कि वे अंग्रेजी शब्दकोश में दिखाई देते हैं–
1. Piquant 2. Pierce
3. Patent 4. Perjury
5. Pasture

कोड :
(A) 5, 3, 4, 1, 2 (B) 5, 3, 4, 2, 1
(C) 3, 5, 4, 1, 2 (D) 3, 4, 5, 1, 2

5. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा एक अंग्रेजी शब्दकोश में उनके क्रम के अनुसार व्यवस्थित होने पर पाँचवें स्थान पर आएगा–
1. Wink 2. Whip
3. Weary 4. Wing
5. Weigh 6. Weather
(A) Wing (B) Weather
(C) Whip (D) Wink

6. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश में आने वाले क्रम के अनुसार लिखें–
1. Brain 2. Brand
3. Beep 4. Boxer
5. Boxed
(A) 3, 5, 4, 1, 2 (B) 4, 5, 3, 1, 2
(C) 3, 4, 5, 1, 2 (D) 4, 3, 5, 1, 2

7. निम्नलिखित विकल्पों में से वह शब्द चुनिए जो दिए गए शब्द के अक्षरों का प्रयोग करके नहीं बनाया जा सकता।
Precipitation
(A) Reaction
(B) Patient
(C) Reacts
(D) Petition

8. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश में आने वाले क्रम के अनुसार लिखें–
1. Mobile 2. Manage
3. Merger 4. Merged
5. Mango
(A) 25341 (B) 25431
(C) 24351 (D) 54132

निर्देश (प्रश्न संख्या **9** एवं **10** के लिए)
निम्नलिखित विकल्पों में से वह शब्द चुनिए जो दिए गए शब्द के अक्षरों का प्रयोग करके नहीं बनाया जा सकता।

9. RIVALRIES
(A) RIVAL (B) RICE
(C) SEAL (D) RISE

10. DICTIONARIES
(A) CATION (B) SITE
(C) DICTATE (D) TIRED

11. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश में आने वाले क्रम के अनुसार लिखें–
1. Mobile 2. Mandate
3. Mandarin 4. Monkey
5. Master
(A) 32514 (B) 31254
(C) 35241 (D) 35214

12. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश में आने वाले क्रम के अनुसार लिखें–
1. Reputation
2. Reptile
3. Republic
4. Replicate
5. Repository
(A) 42531 (B) 43251
(C) 45312 (D) 45231

निर्देश (प्रश्न संख्या **13** एवं **14** के लिए)
निम्नलिखित दो प्रश्नों में, दिए गए विकल्पों में से वह शब्द चुनिए जो दिए गए शब्द के अक्षरों का प्रयोग करके नहीं बनाया जा सकता–

13. ORGANISATION
(A) ORGAN
(B) ORGANISE
(C) NATION
(D) ORATION

14. PERAMBULATOR
(A) RAMPANT (B) LABOUR
(C) MARBLE (D) RAMBLE

15. निम्न में से किसे ठीक प्रकार से व्यवस्थित करने पर शब्द 'Hunter' की वर्तनी बनेगी ?
(A) SUN, MON, TUE, FRI
(B) MON, THU, FRI, SAT
(C) WED, THU, FRI, SAT
(D) SUN, WED, THU, FRI

16. शब्द MAMMER को NUMBER में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक न्यूनतम चरणों की संख्या क्या होगी ? आपको एक समय में दो अक्षरों को साथ-साथ परिवर्तित करना है तथा प्रत्येक परिवर्तन में एक सार्थक शब्द बनना चाहिये।
(A) 6 (B) 4
(C) 2 (D) 3

17. यह शब्द, जो केवल DANGEROUS के अक्षरों से बना है–
(A) GORGEOUS
(B) DANCERS
(C) DRAGNESS
(D) GARDENS

व्याख्यात्मक हल

1. (B)

A	B	C	D	E	F	G	H	I
1	3	5	7	9	11	13	15	17

J	K	L	M	N	O	P	Q	R
19	21	23	25	27	29	31	33	35

S	T	U	V	W	X	Y	Z
37	39	41	43	45	47	49	51

R A D I C A L
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
35 + 1 + 7 + 17 + 5 + 1 + 23
= 89

2. (C) प्रश्नानुसार,

A	1
B	3
C	5
D	7
E	9
F	11
G	13
H	15
I	17
J	19
K	21
L	23
M	25
N	27
O	29

N O M I N A L
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
27 + 29 + 25 + 17 + 27 + 1 + 23 = 149

अत: विकल्प (C) सही है।

3. (C) जिस प्रकार, $\overset{1}{A} \rightarrow 1 \times 2 = 2$

और $\overset{2}{B} \rightarrow 2 \times 2 = 4$

उसी प्रकार,

5 1 18 20 8
E A R T H
×2 ×2 ×2 ×2 ×2
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
10 2 36 40 16

4. (B) अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार, शब्दों को व्यवस्थित करने पर,

Pasture → 5
Patent → 3
Perjury → 4
Pierce → 2
Piquant → 1

अत: 5, 3, 4, 2, 1 सही अनुक्रम है।

5. (A) अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार, शब्दों को व्यवस्थित करने पर,

Weary → 3
Weather → 6
Weigh → 5
Whip → 2
Wing → 4
Wink → 1

अत: 'wing' शब्द पाँचवें स्थान पर आयेगा।

6. (A) सभी शब्दों को शब्दकोश क्रम में रखने पर→ Beep, Boxed, Boxer, Brain, Brand अर्थात् 3,5,4,1,2

7. (C) शब्द Reacts दिए गए शब्द Precipitation के अक्षरों का प्रयोग करके नहीं बनाया जा सकता है, क्योंकि दिए गए शब्द में S अक्षर नहीं है।

8. (B) दिए शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लगाने पर—

Manage → Mango → Merged → Merger → Mobile.

अर्थात्—2, 5, 4, 3, 1

9. (B) RICE, दिए गए शब्द के अक्षरों का प्रयोग करके नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि दिए गए शब्द में 'C' नहीं है।

10. (C) DICTATE, दिए शब्द के अक्षरों से नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि दिए गए शब्दों में दो 'T' नहीं है।

11. (A) शब्दकोश के अनुसार सही क्रम :

(3) Mandarin
(2) Mandate
(5) Master
(1) Mobile
(4) Monkey

अर्थात् 3, 2, 5, 1, 4

12. (D) शब्दकोश के अनुसार सही क्रम

Replicate → 4
Repository → 5
Reptile → 2
Republic→ 3
Reputation → 1

अर्थात् 4, 5, 2, 3, 1

13. (B) ORGANISE में अक्षर E का प्रयोग हुआ है, जोकि प्रश्न में दिये गये शब्द में नहीं है।

14. (A) RAMPANT में अक्षर N का प्रयोग हुआ है, जोकि प्रश्न में दिये गये शब्द में नहीं है।

15. (D) SUN, WED, THU, FRI के अक्षरों को व्यवस्थित करने पर HUNTER की वर्तनी बनती है।

16. (C) M A M M E R
↓
N U M M E R
↓
N U M B E R

अत: 2 चरणों में MAMMER को NUMBER में बदला जा सकता है।

17. (D) शब्द 'DANGEROUS' के अक्षरों का उपयोग करके बनने वाला शब्द 'GARDENS' है।

❑❑

अध्याय 1 अपठित गद्यांश–पद्यांश

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 5 तक)

एक गद्यांश दिया गया है। गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनें–

सम्पूर्ण विश्व में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य नारी को उसके अधिकारों के प्रति प्रोत्साहित कर उसे सशक्त होने का अवसर प्रदान करना है जिससे वह न केवल खुद को सशक्त कर सके बल्कि उन्नत समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सके। भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है। जैसे–दहेज प्रथा, यौन हिंसा, अशिक्षा, भ्रूण हत्या, असमानता, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, कार्य स्थान पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी आदि। स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है। इस सृजन की शक्ति को विकसित–परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, अवसर की समानता का सुअवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण का आशय है। बदलते समय के साथ आधुनिक युग की नारी पढ़-लिख कर स्वतन्त्र है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है तथा स्वयं अपना निर्णय लेती है। अब वह चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करती है। आज स्त्री की छवि भले ही 'पवित्र आदरणीय देवी' की नहीं है लेकिन भारतीय संस्कृति के इतिहास के पन्ने पलट कर देखें तो नर और नारी को गृहस्थी की गाड़ी चलाने के लिए दो पहियों की भाँति माना गया है। एक ने बिना दूसरा अधूरा तथा आश्रयहीन था। आज देश में नारी शक्ति को सभी दृष्टि से सशक्त बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

1. देश में कौन-सी शक्ति को सभी दृष्टि से सशक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं?
(A) बाल शक्ति
(B) वृद्ध शक्ति
(C) नर शक्ति
(D) नारी शक्ति

2. आधुनिक युग में क्या बदलाव देखने को मिला है?
(A) नारी पढ़–लिखकर चारदीवारी में है।
(B) नारी पढ़–लिखकर स्वतन्त्र है।
(C) नारी दहेज प्रथा व यौन शोषण का शिकार।
(D) अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं है।

3. स्त्री को कौन-सी शक्ति भी माना जाता है?
(A) असृजन (B) सृजन
(C) हिंसा (D) शोषण

4. सम्पूर्ण विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कब मनाया जाता है?
(A) 10 मार्च (B) 8 मार्च
(C) 5 मार्च (D) 9 मार्च

5. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(A) नारी–दहेज प्रथा
(B) नारी राजनैतिक अन्याय
(C) नारी चारदीवारी के भीतर
(D) नारी सशक्तीकरण

निर्देश (प्रश्न संख्या 6 से 10 तक)

गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनें–

क्लोरोफिल या पर्णहरित एक प्रोटीनयुक्त जटिल रासायनिक यौगिक है। पत्तों का हरा रंग इसी वर्णक के कारण होता है। इसे फोटोसिंथेटिक पिगमेंट भी कहा जाता है, क्योंकि ये प्रकाश संश्लेषण का मुख्य वर्णक होता है। क्लोरोफिल शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द से हुई है। पौधे की कोशिकाओं में छोटी–छोटी संरचनाएँ होती हैं जिन्हें क्लोरोप्लास्ट कहा जाता है। इस क्लोरोप्लास्ट में ही क्लोरोफिल मौजूद होता है। क्लोरोफिल कार्बन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और मैग्नीशियम से मिलकर बना होता है और सभी स्वपोषी हरे पौधों में पाया जाता है। हरी पत्तियाँ प्रकाश संश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सजीव कोशिकाओं द्वारा प्रकाशीय ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करने की क्रिया प्रकाश संश्लेषण या फोटो सिंथेसिस कहलाती है। क्लोरोफिलाइड सूक्ष्म क्रिस्टलीय पदार्थ है, जबकि क्लोरोफिल अक्रिस्टली होता है। अम्लों के उपचार से मैग्नीशियम निकल जाता है और अब जो उत्पाद प्राप्त होता है, उसे पॉरफिरिन कहते हैं। पॉरफिरिन में अम्ल और क्षार दोनों के गुण होते हैं। विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न अभिकर्मकों के उपचार से क्लोरोफिल से अनेक उत्पाद प्राप्त हुए हैं, जिनसे पता लगता है कि क्लोरोफिल में पाइरोल केंद्रक रहते हैं। प्रक्रिया केवल हरे पादपों में होती है। वास्तव में पौधे का हरा होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि लाल और भूरे रंग के पौधे में भी प्रकाश संश्लेषण–प्रक्रिया होती है, जैसे कुछ समुद्री घास या अन्य पौधे। अतः प्रकाश संश्लेषण–प्रक्रिया में पौधे का रंग उतना महत्त्व नहीं रखता जितना कि पादप–कोशिकाओं के भीतर हरे वर्णक पर्णहरित या क्लोरोफिल की मौजूदगी में ही संभव है। चूँकि क्लोरोफिल ही वह वास्तविक अणु है जिसके द्वारा प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया संपन्न होती है।

6. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(A) ऊर्जा (B) अणु
(C) क्लोरोफिल (D) रासायनिक

7. पौधे की छोटी–छोटी संरचना को क्या कहा जाता है ?
(A) क्लोरोफिल (B) प्रकाश संश्लेषण
(C) मैग्नीशियम (D) अक्रिस्टलीय

8. क्लोरोफिल शब्द की उत्पत्ति कौन-सी भाषा से हुई है ?
(A) ग्रीक (B) लैटिन
(C) ब्रजभाषा (D) संस्कृत

9. पॉरफिरिन में कौन–कौन से गुण होते हैं ?
(A) अम्ल और क्षार (B) ऑक्सीजन
(C) नाइट्रोजन (D) कार्बन

10. पत्तों का हरा रंग किस कारण से होता है ?
(A) क्लोरोफिल (B) वायु
(C) प्रदूषण (D) अम्ल

निर्देश (प्रश्न संख्या 11 से 15 तक)

एक गद्यांश दिया गया है। गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनें–

किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा होती है जो उसका गौरव होती है। राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के स्थायित्व के लिए राष्ट्रभाषा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए जो किसी भी राष्ट्र के लिये सर्वोपरि होती है। स्वतन्त्रता के बाद भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी भाषा को भारत संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी थी। किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य रचना, बनावट की दृष्टि से सरलता और वैज्ञानिकता, सब प्रकार के भावों को प्रकट करने का सामर्थ्य आदि गुण होने अनिवार्य होते हैं। यह सभी गुण हिंदी भाषा में हैं। हिंदी जनसम्पर्क का सरल व सुगम साधन है। आजादी के बाद जब सम्पूर्ण राष्ट्र को एक

सूत्र में बाँधकर रखने की आवश्यकता महसूस हुई तो यह उत्तरदायित्व हिंदी को दिया गया। तभी 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन किया गया। आज हिंदी भाषा को अपने ही घर में, अपने ही देश में श्वास लेने में कठिनाई हो रही है। हम हिंदी में लिखना नहीं चाहते, पढ़ना नहीं चाहते, बोलना नहीं चाहते। महात्मा गाँधी का कथन–'राष्ट्रभाषा के बिना देश गूंगा है।' अथवा श्री कमलापति त्रिपाठी का कथन–'हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।' विश्व में हिंदी भाषा ने अपनी पहचान बनाने के लिए हमारे विचारों की सुदृढ़ नींव रखी। रामचरितमानस, सूरदास के पद, भगवद्गीता आदि अनेक महान ग्रन्थ जिनकी प्रशंसा करते पूरा विश्व नहीं थकता, उनके आनन्द में सब आनन्दित होना चाहते हैं। यहाँ पर एक विशेष ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि हिंदी का अर्थ सिर्फ खड़ी बोली से नहीं है। हिंदी परिवार में इसके जितने रूप हैं वे सब हिंदी ही हैं। भाषा हमारे विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा है–मनुष्य ही बड़ी चीज है और भाषा उसी की सेवा के लिए है। वहीं कबीर दास जी ने भाषा को 'बहता नीर' कहा है। यदि दोनों विद्वानों के कथन को मिलाकर देखा जाए तो हिंदी भाषा बहता नीर बनकर मनुष्य की सेवा कर रही है।

11. हिंदी भाषा को भारत संघ की कौन–सी भाषा के रूप में मान्यता दी गई थी?
(A) संघभाषा (B) विरोधी भाषा
(C) सम्पर्क भाषा (D) राजभाषा

12. हिंदी भाषा को विचारों के आदान-प्रदान करने का कैसा माध्यम माना जाता है?
(A) सुशोभित (B) सशक्त
(C) कमजोर (D) शक्तिहीन

13. कौन-सी भाषा में सभी गुण माने गए हैं?
(A) अवधी (B) बंगाल
(C) खड़ी (D) हिंदी

14. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(A) अवधी भाषा का महत्व
(B) राजभाषा हिंदी का महत्व
(C) संघ भाषा का महत्व
(D) अंग्रेजी भाषा का महत्व

15. स्वतन्त्रता के बाद संविधान सभा ने हिंदी भाषा को कब मान्यता दी थी?
(A) 15 सितम्बर, 1950
(B) 19 सितम्बर, 1949
(C) 11 सितम्बर, 1948
(D) 14 सितम्बर, 1949

निर्देश (प्रश्न संख्या 16 से 20 तक)

गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनें–

जीवन में सत्य का बहुत महत्व है। शास्त्रों में कहा गया है कि सत्य का मार्ग धर्म का मार्ग होता है। महाभारत के युद्ध में पांडवों की जीत इसलिए हुई थी क्योंकि वे सत्य का मार्ग अपना रहे थे। सत्य के मार्ग को धर्म का मार्ग कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि तीन चीजें छुपाए नहीं छुपतीं–सूरज, चन्द्रमा और सत्य। जो लोग सत्य का, न्याय का पक्ष लेते हैं, उनकी प्रशंसा सभी लोग करते हैं। सत्य का साथ देने वालों को इतिहास स्वर्णिम पन्नों पर दर्ज करता है। परन्तु जो लोग झूठ, असत्य का साथ देते हैं, उनकी चारों ओर आलोचना होती है। सत्य का महत्व तब ही है जब सत्य को जीवन में मन, वचन, कर्म से स्वीकार किया जाये तथा प्रयोग किया जाये। सत्य की महिमा का बखान करना, सत्य के विषय में उपदेश देना जितना सरल है, जीवन में सत्य का आचरण करना उतना ही कठिन है। सत्य का आचरण करने वाला व्यक्ति ही सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करता है। सत्य के आचरण के आधार पर ही हम एक–दूसरे पर विश्वास करते हैं। परस्पर विश्वास की नींव पर ही सम्पूर्ण समाज की रचना टिकी हुई है। सत्य मानव की सबसे बड़ी शक्ति है। सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं हो सकता। हमारे देश में तो राजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी हुए हैं, जिनकी मिसाल आज तक दी जाती है। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र ने सत्य के मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा की थी और आजीवन उसका पालन किया। उनका कहना था, चन्द्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार पहली पंक्ति। दूसरी पंक्ति पै दृढ़ श्री हरिश्चन्द्र को, टरै न सत्य विचार।

16. सत्य के मार्ग को कौन–सा मार्ग कहा जाता है?
(A) अन्याय का मार्ग (B) धर्म का मार्ग
(C) आलोचना का मार्ग (D) प्रशंसा का मार्ग

17. जीवन में कौन-से मार्ग का बहुत महत्व है?
(A) विरोधी (B) असत्य
(C) झूठ (D) सत्य

18. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(A) असफलता का मार्ग
(B) अन्याय का मार्ग
(C) सत्य का मार्ग
(D) कठिनाई का मार्ग

19. आज भी कौन-से विद्वान को सत्यवादी के नाम से जाना जाता है?
(A) कालिदास (B) हरिश्चन्द्र
(C) जयशंकर प्रसाद (D) पांडवों

20. सत्य का आचरण करने वाला व्यक्ति सामाजिक जीवन में क्या प्राप्त करता है?
(A) प्रतिष्ठा एवं सम्मान
(B) आलोचना एवं असत्य
(C) अनादर एवं अन्याय
(D) विश्वास एवं अपराध

निर्देश (प्रश्न संख्या 21 से 25 तक)

एक गद्यांश दिया गया है। गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनें।

दीपावली पूरे देश में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाने वाला सबसे बड़ा पर्व होता है। इस दिन भगवान श्रीराम, माता सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या लौटे थे। इस खुशी में अयोध्यावासियों ने दीये जलाकर उनका स्वागत किया था। अमावस्या की अंधेरी रात जगमग असंख्य दीपों से जगमगाने लगती है। यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाया जाता है। दशहरे के बाद से ही घरों में दीपावली की तैयारियाँ व्यापक स्तर पर शुरू हो जाती हैं, प्रत्येक समाज त्योहारों के माध्यम से अपनी खुशी को प्रकट करता है। दीपावली का त्योहार जीवन में खुशी प्रदान करता है। नया जीवन जीने का उत्साह प्रदान करता है। भारत देश में दीपावली का बहुत अधिक महत्व है। इस दिन को अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक माना जाता है। इस दिन को बहुत ही सुंदर और पारंपरिक तरीके से मनाया जाता है। दीपावली के दिन धन की देवी लक्ष्मी जी, माता सरस्वती जी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है।

21. दीपावली किस दिन मनाई जाती है?
(A) पूर्णिमा (B) किसी भी दिन
(C) अमावस्या (D) रविवार

22. दीपावली सभी के जीवन में क्या प्रदान करती है?
(A) क्रोध (B) दुःख
(C) खुशी (D) लाभ

23. दशहरे के बाद कौन-से त्योहार की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं?
(A) रक्षाबंधन (B) होली
(C) छठ पूजा (D) दीपावली

24. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(A) नव वर्ष (B) रक्षाबंधन
(C) दीपावली (D) दशहरा

25. भगवान श्रीराम, सीता व लक्ष्मण के साथ कितने वर्ष बाद वनवास से अयोध्या लौटे थे?
(A) पाँच वर्ष (B) चौदह वर्ष
(C) तीन वर्ष (D) दो वर्ष

निर्देश (प्रश्न संख्या 26 से 31 तक)

पद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए–

सुनता हूँ मैंने भी देखा,
काले बादल में हँसती चाँदी की रेखा।
काले बादल जाति-द्वेष के,
काले बादल विश्व-क्लेश के,
काले बादल उठते पर
नवस्वतन्त्रता के प्रवेश के।
सुनता आया हूँ, है देखा
काले बादल में हँसती चाँदी की रेखा।
(चाँदी की रेखा–सुमित्रानन्दन पन्त)

26. "काले बादल में हँसती चाँदी की रेखा।" पंक्ति का भाव है–
(A) बादलों से टकराने से बिजली चमकती है
(B) अँधेरे के बाद प्रकाश आता है

(C) काले बादलों में चाँदी की रेखा रहती है

(D) विपत्तियों के बीच आशा की किरण दिखायी देती है

27. 'काले बादल' प्रतीक हैं.....के।

(A) मानसून द्वारा आने वाली खुशहाली

(B) तूफान

(C) गर्मी से मुक्ति

(D) जातिगत वैमनस्य

28. 'काले बादल में हँसती चाँदी की रेखा' में कौन–सा अलंकार है ?

(A) उत्प्रेक्षा अलंकार (B) श्लेष अलंकार

(C) उपमा अलंकार (D) रूपक अलंकार

29. निम्न में से 'बादल' का पर्यायवाची शब्द नहीं है–

(A) घन (B) पयोधर

(C) जलज (D) जलद

30. 'स्वतन्त्रता' का विलोम शब्द है–

(A) परतन्त्रता (B) पराधीनता

(C) परतन्त्र (D) गुलाम

31. कवि क्या सुनने और देखने की बात कहता है?

(A) आशा की किरण को

(B) निराशा को

(C) बादलों को

(D) बिजली को

निर्देश (प्रश्न संख्या 32 से 37 तक)

कविता की पंक्तियाँ पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में **सबसे उचित** विकल्प चुनिए–

मेघ आए, बड़े बन-ठन के सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्ही'
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
क्षितिज-अटारी गहराई दामिनी दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की'
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

32. 'मेघ आये बड़े बन-ठन के सँवर के 'पंक्ति किसमें हैं ?

(A) बादल सज-धज कर आये हैं

(B) भूरे-काले बादल आकाश में घिर आये हैं

(C) बादलों ने सूरज को ढक लिया है

(D) बादलों ने बिजली से शृंगार किया है

33. मेघों के आने से लगता है–

(A) मानो कहीं उत्सव मनाया जा रहा है

(B) मानो गाँव में शहर से मेहमान आये हों

(C) बादल आसमान में छा गये हैं

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

34. 'बरस बाद सुधि लीन्हीं' इस पंक्ति का भाव किसमें है–

(A) बादल बन सँवर कर आये हैं

(B) बादल मेहमान बन कर आये हैं

(C) बादल एक बरस के बाद आये हैं

(D) बादलों ने याद किया ह

35. कविता में कौन–सा अलंकार है ?

(A) मानवीकरण अलंकार व रूपक

(C) उत्प्रेक्षा अलंकार

(C) श्लेष अलंकार

(D) रूपक अलंकार

36. पीपल ने किस प्रकार मेघों का स्वागत किया ?

(A) गले लगकर

(B) उलाहना देकर

(C) झुककर प्रणाम करके

(D) प्रसन्न होकर

37. 'पाहुन' शब्द का क्या अर्थ है ?

(A) मेहमान (B) पैर

(C) आना (D) पालना

निर्देश (प्रश्न संख्या 38 से 43 तक)

नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़कर सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए–

पूछो किसी भाग्यवादी से,
यदि विधि-अंक प्रबल है।
पद पर क्यों देती न स्वयं
वसुधा निज रतन उगल है ?

38. कवि के अनुसार, यदि भाग्य ही सब कुछ होता, तो क्या होता ?

(A) रत्न मिल जाते

(B) पैरों के नीचे वसुधा होती

(C) धरती स्वयं ही रत्न रूपी सम्पत्ति उगल देती

(D) रत्न स्वयं प्रकाशयुक्त हो उठते

39. तुकबंदी के कारण कौन-सा शब्द बदले हुये रूप में प्रयुक्त हुआ है ?

(A) रतन (B) प्रबल

(C) स्वयं (D) उगल

40. इनमें से कौन-सा 'वसुधा' का समानार्थी है ?

(A) वसुंधरा (B) महीप

(C) वारिधि (D) जलधि

41. 'प्र' उपसर्ग से बनने वाला शब्द-समूह है–

(A) प्रत्येक, प्रभाव, प्रदेश

(B) प्रसाद, प्रत्येक, प्रपत्र

(C) प्रभाव, प्रदेश, प्रपत्र

(D) प्रत्युत्तर, प्रदेश, प्रपत्र

42. कवि ने किसकी महिमा का खण्डन किया है ?

(A) किसी के विधान का

(B) भाग्यवाद का

(C) वसुधा का

(D) रतनों का

43. विधि-अंक से तात्पर्य है–

(A) न्याय-अंक

(B) 'विधाता' लिखा होना

(C) भाग्य का लिखा हुआ

(D) न्यायवादी

उत्तरमाला

1. (D)	**2.** (B)	**3.** (B)	**4.** (B)	**5.** (D)
6. (C)	**7.** (B)	**8.** (A)	**9.** (A)	**10.** (A)
11. (D)	**12.** (B)	**13.** (D)	**14.** (B)	**15.** (D)
16. (B)	**17.** (D)	**18.** (C)	**19.** (B)	**20.** (A)
21. (C)	**22.** (C)	**23.** (D)	**24.** (C)	**25.** (B)
26. (D)	**27.** (D)	**28.** (B)	**29.** (C)	**30.** (A)
31. (A)	**32.** (B)	**33.** (B)	**34.** (C)	**35.** (A)
36. (C)	**37.** (A)	**38.** (C)	**39.** (A)	**40.** (A)
41. (C)	**42.** (B)	**43.** (C)		

❑❑

Chapter 1 Comprehension

A Comprehension Exercise is mainly consisted of a passage, upon which questions are set. The main purpose of this exercise is to test the ability of a student.

Therefore student is need to read the passage carefully and choose the correct answer out of the given alternatives.

Poem is a form of literary art which uses aesthetic and rhythmic qualities of language such as phonoaesthetic sound symbolism etc. 'Poem' comes from the Greek word poiēma which means a "thing made."

Important Questions

Direction (Q. No. 1 and 2)

Read the passage given below and answer the questions. Each question is followed by four answers only one of which is correct. you have to choose that correct answer.

To forgive an injury is often considered to be a sign of weakness; it is really a sign of strength. It is easy to allow oneself to be carried away by resentment and hate into an act of vengeance but it takes a strong character to restrain those natural passions. The man who forgives an injury proves himself to be superior of the man who wronged him and puts the wrong-doer to shame. Forgiveness may even turn a foe into a friend. So mercy is the noblest form of revenge.

1. The word strength is a :

(A) Abstract noun (B) Collective noun

(C) Common noun (D) Material noun

2. One who does not take revenge is :

(A) a foolish man (B) a foe

(C) a weak man (D) a strong man

Direction (Q. No. 3 to 5)

Read the given passage carefully and answer the questions that follow by selecting the most appropriate option.

Antarctica is a icy continent in the South Pole. It is covered by permanently frozen ground, is surrounded by water and is about 1.5 times longer than the United States of America.

The world's largest desert is in Antarctica. 98% of the land is covered with a continental ice sheet; the remaining 2% of land is barren rock. Antarctica has about 87% of the world's ice. The South Pole is the coldest, windiest and driest place on Earth. The coldest temperature ever recorded on Earth was at the South Pole; it reached as low as — 128.6 °F or — 88.0 °C. On an average most of the Antarctica, gets less than 2 inches of snow each year. Although scientific expeditions visit Antartica, there are no permanent human residents. This is because of the extreme weather, which includes freezing temperature, strong winds and blizzards. There are about 4000 seasonal visitors to Antarctica. Antarctica hasn't always been located at the South pole. It has drifted, like the other continents and has ranged from the Equator during the Cambrian period, about 500 million years ago to the South Pole. During the time of the dinosaurs. Antarctica has more temperate and housed dinosaur: and many other life-forms. Now there is very little indigenous life.

3. The word 'windiest' in the passage is a

(A) second form of verb

(B) superlative form of adjective

(C) superlative form of adverb

(D) positive form of noun

4. Has Antarctica always been fixed in the South Pole ?

(A) Yes

(B) No

(C) May be

(D) Not given in the passage

5. Who are the earliest known inhabitants of Antarctica ?

(A) American scientists

(B) Indian scientists

(C) Dinosaurs

(D) It has always been a desert

Direction (Q. No. 6 to 8)

Read the given passage carefully and answer the questions that follow by selecting the most appropriate option.

The first thing which a scholar should bear in mind is that a book ought not to be read for mere amusement. Half educated persons read for amusement, and are not to be blamed for it, they are incapable of appreciating the deeper qualities that belong to a really great literature. But a young man who has passed through a course of University training should discipline himself at an early joy never to read for mere amusement. And once the habit of discipline has been formed, he will find it impossible to read for mere amusement. He will then patiently throw down any book from which he cannot obtain intellectual food, any book which does not make an appeal to the higher emotions and to his intellect. But on the other side, the habit of reading for amusement becomes with thousands of people exactly the same kind of habit as wine-drinking or opium-smoking; it is like a narcotic, something that helps to pass the time, something that helps to pass the time, something that keeps up a perpetual condition of dreaming, something that eventually results in destroying all capacity for thought, giving exercise only to the surface parts of the mind and leaving the deeper springs of feelings and the higher faculties of perception unemployed.

6. The writer believes that half-educated persons are not able to

(A) enjoy wine-drinking

(B) enjoy dreaming

(C) think properly

(D) appreciate hidden qualities of admirable literature

7. The word 'narcotic' in the passage means

(A) great literature

(B) intoxicant

(C) cheap books

(D) intellectual exercise

8. The phrase 'the higher faculties' in the passage means

(A) different departments in the University

(B) different ways of enjoying things

(C) mental powers of a high order for understanding great literature

(D) superficial part of the mind

Direction (Q. No. 9 to 11)

Read the given passage carefully and answer the questions that follow by selecting the most appropriate option.

Work expands so as to fill the time available for its completion. The general recognition of this fact is shown in the proverbial phrase, it is the busiest man who has time to spare.

Thus, an elderly lady at leisure can spend the entire day writing a postcard to her niece. An hour will be spent in finding the postcard, another hunting for spectacles, half an hour to search for the address, an hour and a quarter in composition and twenty minutes in deciding whether or not to take an umbrella when going to the pillar-box in the street. The total

effort that would occupy a busy man for three minutes, all told, may in this fashion leave another person completely exhausted after a day of doubt, anxiety and toil.

9. What is the total time spent by the elderly lady in writing a postcard ?
(A) Three minutes
(B) A full day
(C) Four hours and five minutes
(D) Half an hour

10. What happens when the time to spent on some work increases ?
(A) The work is done smoothly
(B) The work is done leisurely
(C) The work consumes all the time
(D) The work needs additional time

11. What does the expression 'pillar-box' stand for ?
(A) A box attached to the pillar
(B) A box in the pillar
(C) Box office
(D) A pillar-type postbox

Direction (Q. No. 12 to 15)

Read the given passage and answer the question that follow by selecting the most appropriate option.

Scientists are extremely concerned about the changes taking place in our climate. The changes are said to be alarmingly rapid and the result of human activity whereas in the past it had been natural and much **slower.** The major problem is that the planet appears to be warming up (global warming). This is occurring at a rate unprecedented in the last 10,000 years. The implications are very serious. Rising temperatures could give rise to extremely high **increase** in the incidence of floods and droughts having defect on agriculture.

It is thought that this unusual warming of the earth has been caused by greenhouse gases such as carbon dioxide, being emitted into the atmosphere by car engines and modern industrial processes. Such gases not only add to the pollution of the atmosphere, but trap the heat of the sun leading to the warming up of the planet. It has been suggested that industrialised countries would try to reduce the volume of greenhouse gas emissions and plant more trees to create sinks to absorb greenhouse gases.

12. The antonym of the underlined word 'increase' is
(A) increment (B) reduction
(C) smaller (D) rapid

13. The climatic changes taking place today are different from earlier changes as :
(A) today they are slower and more natural
(B) today they are much faster and caused by the humans
(C) today they do not threaten the humans because of their speed
(D) today men are affected by them easily

14. Increase in global temperatures may result in :
(A) rains
(B) destruction of crops
(C) death of animals
(D) a long period without rains

15. The underlined word 'slower' in the passage is :
(A) Noun (B) Verb
(C) Adjective (D) Adverb

Directions (Q. No. 16 to 18)

Read the following passage carefully and choose the correct answer from the answers given below each question :

The good book of the hour, then, I do not speak of the bad ones-is simply the useful or pleasant talk of some person whom you cannot otherwise converse with, printed for you. Very useful often, telling you what you need to know; very pleasant often, as a sensible friend's present talk would be. These bright account of travels; good-humoured and witty discussions of question; lively or pathetic story-telling in the form of novel; firm fact-telling, by the real agents concerned in the events of passing history. all these books of the hour, multiplying among us as education becomes more general, are peculiar characteristic and possession of the present age. We ought to be entirely thanful for them, and entirely ashamed of ourselves if we make no good use of them. But we make the worst possible use, if we allow them to usurp the place of true books : for strictly speaking, they are not books at all, but merely letters or newspaper in good print.

16. How, according to the author, is the good book of the hour very useful ?
(A) Because it gives the information required by you
(B) Because it is in printed form
(C) Because it gives you pleasure
(D) Because it is in the form of conversation

17. Which one of the following statements is not TRUE ?
(A) The books of the hour are multiplying
(B) They are peculiar characteristic of the present age
(C) They are true scriptures of their writers
(D) We must be thankful for them

18. How does the writer define the good book of the hour ?
(A) The good book of the hour is informative in nature
(B) It is the useful or pleasant talk of someone in print
(C) The good book of the hour is mere communication
(D) The good book of the hour has no permanent value

Directions (Q. No. 19 to 22)

Read the passage carefully and answer the questions that follow :

"Ever since childhood I've wanted of mere curiosity to ask a king or a queen a couple of questions." "Go ahead I'm just as curious to know what they are, particularly from a woman." "How does it feel to be what you are ?" "It feels fine here in Greece because it is creative work, unlike in most countries." "Do you feel superior because of your royal blood ?" "No, not a bit." "How did you feel in your childhood when you found out you were a princess ?" "Troubled, I used to debate with myself ! What right have you got to be on top without going through the struggle ? Ultimately, Plato's Literature solved my problem. He has mentioned that each class of society has its own functions and accordingly, leaders in order to perform theirs had to be trained for it from childhood. I quietened my uneasiness by using the strategy of Plato's leaders.

19. The questions asked in the above conversation can be classified into which category ?
(A) Casual (B) Critical
(C) Probing (D) Political

20. What helped the person resolve the conflict ?
(A) Acquisition of the top position
(B) Immense curiosity
(C) Imparting leadership training right from childhood
(D) Philosophy that leaders are born to rule

21. The above conversation seems to have taken place between whom ?
(A) Two women
(B) The queen to Greece and a woman intrviewer
(C) The queen of Greece and the princess
(D) The princess and a leader

22. What made one of the persons in the conversation feel uneasy ?
(A) Hereditary position
(B) Feeling of superiority
(C) Lack of creative work
(D) Unreasonably high curiosity

Answers

1. (A) **2.** (D) **3. (B)** **4. (B)** **5. (D)**
6. (D) **7. (B)** **8. (C)** **9.** (B) **10.** (C)
11. (D) **12.** (B) **13.** (B) **14.** (D) **15.** (C)
16. (A) **17.** (C) **18.** (B) **19.** (A) **20.** (D)
21. (B) **22.** (A)

❐❐